सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम

* श्रीप्रमोदारण्य विहारिणी विहारिणीविजयते *

रसिकाचार्यशिरोमणि श्रीमतीरसमोदलता

विरचित

❀ द्वादश वाटिका विहार ❀
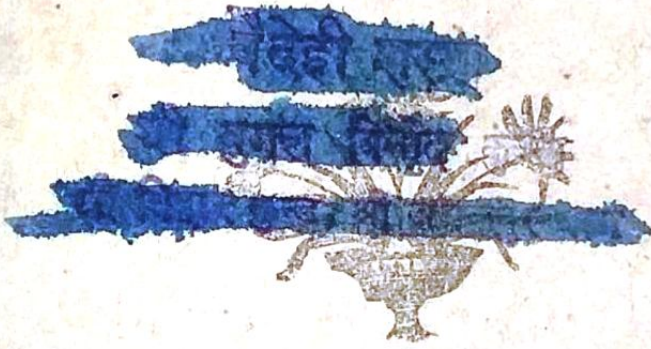
पाद टिप्पणी संयोजकः-

शत्रुहन शरण

प्रकाशक-

श्रीनृपनन्दन शरणजी

श्रीरामनवमी सं० २०२९

[मूल्य वन विहार भावना

सीताराम ❀ सीताराम ❀ सीताराम

किसी कुंज में सखियों के संयुक्त श्री युगल सरकार चौसर खेलते हैं, किसी कुंज में गेन्द खेलते हैं। किसी कुंज में परस्पर विराजमान होकर, वात्स्यायन सूत्रों की व्याख्या करते हैं। किसी कुंज में श्रीप्रिया प्रियतम दोनों ही विहार कर रहे हैं। वहाँ और कोई जाने नहीं पाती।

तड़ाग वापिका कूपा मणिवद्ध तटामुखाः ।
शोभमाना तटागारै हंस सारस क्रीड़नैः ॥८॥
क्रीड़न्तीभिः सुन्दरीभि स्तद्वनं सुविसङ्कटम् ।
अन्तरे दीप्यमानं स्याद्वहि वीरैः सुरक्षितम् ॥६॥
इत्थंभूते बने रम्ये जानकी रमण प्रभोः ।
भ्राजतेभवनं रम्यमसंख्योच्च विशालकम् ॥१०॥
मणिभिश्चित्रितै स्सप्त प्राकारैश्च परिवृतम् ।
काञ्चनैः कलशैर्दिव्यैः ध्वजैर्दूरात्प्रदर्शितम् ॥११॥

तड़ाग बावली कूपादि सभी जलाशयों के तट मणियों से बन्धे हैं। तट पर बने भवनों से तथा हंस सारस की क्रीड़ाओं से वहाँ की रमणीयता बढ़ रही है ॥ ८ ॥ उस निरापद बन में सुन्दरियाँ क्रीड़ा करती हैं, जिससे बन का अन्तर्भाग दीप्तिमान हो रहा है। बाहर से योद्धा गण रक्षा करते है ॥ ६ ॥ इस प्रकार के बनमें श्रीजानकी रमण जू के असंख्य ऊँचे विशाल रमणीक भवन सुशोभित हो रहे हैं।१०। यह बन सात मणि विचित्रित कोटों से आवृत हैं। उन कोटों के ऊपर वाले स्वर्ण कलश और दिव्य ध्वजाएं दूर से ही दीख पड़ती हैं ॥११॥

इस प्रकार अनेकों खेल खेलते, अनेक तमाशे देखते, श्री विचित्र वन केलिये प्रस्थान किया।

॥ इति श्रीशृङ्गार बन बर्णन ॥

तेतु सप्तैव प्राकाराः त्रिकद्वारोच्च गोपुरैः।
शोभमानाश्चतुर्दिक्षु चौम जाल गवाक्षकैः॥१२॥

इन सातों कोटों के सिंहदरवाजों में तीन तीन ड्योढ़ियां बनी हैं। अटारी, जाल, झरोखों से चारो ओर से कोट सुशोभित हो रहे है॥१२॥

❋ अथ विचित्र बन वर्णन ❋

(वार्ता)

❋ श्री विचित्र बन रूपक वर्णन ❋

प्रथम कोट में चारो तरफ नाना रंगों की मणियों की दीवालें हैं। स्फटिक मणि की दीवाल पर नील, पीत, हरितादि मणियों के बेलि बूटे, जाली झरोखादि की रचना है। अनेकों चित्राम बने हैं।

जहाँ नील रंग की दीवाल है, तहाँ श्वेत, अरुणादि मणियों की रचना बनी है। इस तरह प्रथम कोट की रचना है।

इसी तरह से पाँचों कोटों की रचना जानना। सब कोटों में चारो तरफ चार चार फाटक हैं। कोटों के मध्य अवकाशों में अनेकों तरह के कुंज निकुंज बने हैं। कुंजों के मध्य अवकाशों में वृक्ष, लता, फूल, वेदी, बंगला, तड़ाग आदि सुशोभित हैं।

श्री विचित्र वन के पूरब श्रीमती श्रीप्रसादाजी के महल का विस्तार है, दक्षिण श्रीमती बिमलाजी का महल है, पश्चिम श्री अशोक वन हैं, तथा उत्तर श्री शृङ्गार वन है। यहाँ की बागेश्वरी श्रीमती चित्राजी हैं।

इस प्रकार से बिचित्र बन के प्रथम कोट के फाटक पर सखी समाज संयुक्त श्रीनृपनन्दिनी श्रीनृपनन्दन जू आये। सखियों ने नगारे पर चोप दिया। सो सुनकर अपनी सखियों के संयुक्त श्रीबागेश्वरी जी आईं। श्री लाड़िली लाल जू को प्रणाम करके, पट पाँवड़े देती हुई, निज निकुंज को लिवा ले चलीं। गाती बजाती नृत्य करती हुई अपने कुंज में ले आईं।

प्रथम आवरण वाले कोट दीवाल में आश्चर्यजनक चित्राम बने हैं। उसका विवरण मूल रचना में आगे पढ़िये।

मध्य अन्तराल में श्रीसरयू धारा है। धारा के दोनों ओर द्रुमकुंज बने हैं।

इन द्रुमों के स्वरूप श्री 'शृङ्गार रहस्य रत्न मंजरी' के शब्दों में पढ़िये :—

केचित्फलैस्तु सम्पूर्णाः केचित्पुष्प मयास्तथा।
केचित्केवल पत्राढ्याः केचितत्र त्रिभिर्युताः ॥१॥

केचिद्धरित पत्रास्ते केचिदारक्त पत्रकाः।
सुवर्णवर्ण पत्राश्च नील पत्रास्तथापरे ॥२॥

अर्थात् किसी बृक्ष में केवल फल ही है, किसी में केवल फूल, किसी में केवल पत्ते, किसी में तीनों हैं॥ १ ॥

किसी बृक्ष के पत्ते हरे, किसी के लाल, किसी के सुनहले, किसी के नीले हैं।

श्री युगल सरकार को सिंहासन पर बैठाल कर पूजन किया। नाना तरह के व्यंजन थालों में सजाकर लाईं। सुन्दर मणिमय चौकी पर आगे धर कर, एक एक व्यंजन का स्वाद कह कर, भोजन कराने लगीं। पवाते समय अनेकों तरह के हास्य रसमय बचन कहती हैं, जिनको सुनकर सब हँसने लगती हैं। दोनों सरकार को आनन्द उत्पादन करती हैं। इस प्रकार बहुत देर तक श्रीप्रिया प्रियतम जू भोजन करते हैं।

हरितैः कुसुमैर्युक्ताः केचिद्रक्तप्रसूनकाः।
पीत पुष्पास्तथा केचिन्नील पुष्पद्रुमाः क्वचित् ॥३
केचिद्विचित्र पत्राश्च विचित्र कुसुमास्तथा।
केचिच्चित्र फलावृक्षाः विचित्र लतिका क्वचित्॥४
श्वेत पुष्पलताः केचिन्नील पुष्पलताः क्वचित्।
पीत पुष्पलताः केचिद्रक्त पुष्पलता द्रुमाः ॥५॥

किसी के फूल हरे, किसी के लाल, किसी के पीले, किसी के नीले रंग के हैं ॥ ३ ॥ किसी के पत्ते विचित्र हैं, किसी के फूल विचित्र हैं, किसी के फल विचित्र हैं। कोई लता ही विचित्र है ॥ ४ ॥ किसी लता के फूल श्वेत, किसी के नील, किसी के पीत, किसी के लाल हैं ॥५॥

प्रथम आवरण में श्री लाड़िली लाल जू साँझी उत्सव का आनन्द लेते हैं। यहाँ सर्वदा आश्विन महीने की छटा छाई रहती है। यथा-

वन विचित्र चित्रावली, चित्रित चित्र विचित्र।
दिव्य नेत्र सद्गुरु सुप्रद, चितत होत पवित्र ॥
(श्रीयुगलविहारिणजी)

तत्पश्चात् आचमन कराकर, बीरा पवाकर, अतर लगाकर, आरति की। श्रीप्रिया प्रियतम जू के संग की सखियों ने साथ ही भोजन किया। तत्पश्चात् श्रीकुंजेश्वरीजी ने अपनी सखियों के संयुक्त प्रसादी पाई।

भोजन कराकर कुंजों की रचना दिखाने को लिवा चलीं। किसी कुंज की दीवाल में मणियों की ऐसी कृत्रिम रचना है कि साक्षात् की भाँति देखने में आती है।

वन विचित्र विच चित्र पिय, लिखत सुप्यारी केर।
रति विपरीति निहारि तिय, रहति लाजवस हेर॥
रहति लाजवस हेर, फेर दृग मृग बहरावै।
पिय ऊपर निज लखे लाज नवला तन छावै॥
वह नितंव की हलनि अंग मिलवनि नागरि तिय।
'प्रेम प्रभा' मोहनि सुचित्र लखि वन विचित्र पिय॥

द्वितीय आवरण की भूमि ऐसी विचित्र मणियों से जटित हैं कि स्थल पर जल की, जल में स्थल की भ्रान्ति होती है। महलों में भूल भुलैयाँ वाले मार्ग बने हैं। द्वार की जगह दीवार, दीवार की जगह द्वार दीख पड़ता है। यहाँ की सखियाँ जादूगरनी और वाजीगरनी हैं। वह नाना प्रकार आश्चर्यजनक कौतुक दिखाती रहती हैं।

मायेव शंवरस्यैषा कालनेमिरिवायता।
ऐन्द्रजालिक राजस्य विश्वकर्तुर्मयस्य वा॥
गन्धर्व शावरादीनां मायामय महीरुहैः।
वाटिका रामचन्द्रस्य त्रिलोक्यां प्रथितामुने॥१॥

[श्रीशिव संहिता ५।५६,६०]

किसी दीवाल के चित्र में सिंह को हाथी दबाये हुये है, किसी जगह बाघ को सियार मार रहा है, किसी जगह बिल्ली को मूसा पकड़े हुये है, किसी जगह मूसा सर्प को निगल रहा है, किसी जगह लावा पक्षी बाज को खदेरे जा रहा है, बाज उड़ा भागा जाता है। यह सब साक्षात् की भाँति देखने में आते हैं।

अर्थात् इस वन की विचित्रता देखकर ऐसी प्रतीति होती है कि यह महा-मायावी शंवरासुर की माया है, अथवा कालनेमि की सुविस्मृत माया है, अथवा इन्द्रजाल विद्या विशारद विश्वकर्मा या मय की माया है।

यहाँ के बृक्ष भी गन्धर्व शवरादिकों की माया के समान माया मय है। श्री जानकीकान्त जू की यह वाटिका अपने गुणों से त्रिलोक में ख्यात है।

तीसरे आवरण के कोट महल की दीवाल ऐसी मणियों की बनी है, जो दिन रात बराबर अपने रंग बदलती रहती हैं। इसके आवरण के अन्तराल भर में पड़ने वाला उनके प्रकाश का रंग भी बदला करता है। अतः अन्तराल भर की बस्तुएं क्षण क्षण में विभिन्न रंगों की दीख पड़ती है।

इस आवरण में रजनी गृह, दिवस गृह, चन्द्रिका चौक, तमिस्रा-चौक आदि कुतूहलोत्पादक महल बने हैं।

चौथे आवरण में द्वादश सेवा कुञ्ज बने हैं। ये सब भी आश्चर्य रचना मय बने हैं। इसमें स्थित हिंडोलकुंज की लीला पढ़िये:—

अन्दोल केलि निकुंज यह विधि झूलि सिय रघुलाल।
पुनि चित्र वन मन मुदित गवने रूपनिधि सुखजाल॥

कहीं पर है पृथिवी, परन्तु देखने में आता है कि भारी गंभीर धारा का प्रवाह चल रहा है। उसमें बड़े बड़े जलचर गण इधर उधर तैर रहे हैं। एक दूसरे को पकड़ कर दबा देते हैं। उस जल में नौका चल रही है।

(तहँ अली करि आरति निछावरि भोग भरि मनि थार।
अति प्रीति मधु भोजन कराये रचे नव सिंगार॥
पुनि लै गई आन्दोल कच्छ सुस्वच्छ मनि बहु धाम।
बहु रंग चित्र हिंडोलना झूमक झलक मनि दाम॥
कल कलित वलित बिहंग भौंरा चलित कल बल डोरि।
नव पुत्रिका कंचन मई गावैं नचैं अँग मोरि॥
इक लक्षदल मनि कंज मंजुल प्रति दलन आन्दोल।
सब सखिन युत झूलन लगे सिय लाल मन रसलोल॥
(दयासिन्धु श्रीरसिकअलीकृत श्रीअन्दोल रहस्य दीपिका)

पांचवे आवरण में गुलाब जल से सम्पूर्ण सरोवर है। सरोवर के मध्य में आश्चर्य पर्वत है। पर्वत शिखर पर मन्दार वृक्ष है। उसकी छाया में रासवेदिका बनी है। यहाँ रास में गन्धर्व कुमारियों नाना आश्चर्य कौतुक प्रगट करती रहती है। यथा—

दोहा:—

इन्द्र जाल के स्वांग बहु, 'गन्धर्वी के ख्याल।
करन लगीं गंधर्व सुता, निरखहिं लाड़िलीलाल॥१॥

कहीं पर बहुत गंभीर जल भरा है, परन्तु देखने में आता है कि पृथिवी की रचना बनी है।

कुंजों के मध्य में बृक्षावली, लता, वेदिका, बंगले वावली आदि अनेकों रचनाएँ बनी हैं।

❀ सवैया ❀

(गान्धर्वी माया द्वारा रासस्थल में प्रकट दृश्य)

देखिये लाल मराल की पाँति परावत हंस रु मोरन की।
सुक सारिका चाष पपीहन की अरु तीतर भृङ्ग चकोरन की॥
लखि लीजै लला जू कुरंग की पाँति गयन्द अनेकन घोरन की।
पुतरी बहु भाँति नचै लखिये गति लेति हैं लाल अमोलनकी॥१॥
लखिये फुलवारि अनेक लगी औ लतान में आम लगे चखिये।
चखिये फल दाड़िम दाख छुहार बदाम लवंग लता देखिये॥
देखिये यह बीन बजे अपुने यह नारि निहारि नचै रखिये।
रखिये यह बाग बिहार करौ पिय और सरोवर हू लखिये॥२॥
थल में बहु पंकज फूले पिया तिन पै बहु नारि नचै लखिये।
तरु पत्रन पै गृह तोरन पै तिय निर्त करै तिनहूँ लखिये॥
बिनु वारि चलै जल ज्यों सफरी बिन मेघ भई बरषा लखिये।
यह मूंदि पिटार दई अबही तिय आपुके पाछे खड़ी लखिये॥४॥
यक बीरी दई पिय के कर में, सो गई उड़ि आनन मेलत ही।
वनिता एक हाथ गही बलकै, सो गई छुटि पानिके फेरत ही॥
एक हेम लता परसी कर सो लिपटी सुवनै न निवेरत ही।
यक दर्पन माहि असंख्य तिया निकसी करलै मुख हेरत ही॥५॥

इस प्रकार से विचित्र बन की शोभा देखते श्रीमहाराज किशोरी जू श्रीमहाराज किशोर जू सखी समाज संयुक्त, गज-रथ पर चढ़कर, श्रीअशोक वाटिका के लिये चल पड़े।

॥ इति श्रीविचित्र बन विहार बर्णन ॥

पिय वस्तु खरीदिये देस विदेस की नाम अनेकन जानौ लला।
कल कन्दुक कोमल श्रीफल गोल नरंग सुरंग निहारौ लला॥
नवरंग सुरत्न की माल विसाल सदा उर धारौ न त्यागो लला।
एक चन्द्रमनी परसौ मुख सौं सरसौ रस अमृत पाइ लला॥६॥

दोहा:—

'निरखि मुदित मन दंपती, हँसत विलोकत ख्याल।"

श्रीअवध सागर, चौदहवें रत्न के
१ से ६ छन्द तक।

❋ अथ श्रीअशोक वाटिका बिहार ❋

❋ वार्ता ❋

❋ श्रीअशोक वाटिका का रूपक बर्णन ❋

प्रथम कोट (का आवरण महल) नव खंड (तल्ले) ऊर्ध्व को गया है। प्रत्येक खंड में भारी भारी तीन तीन दालान हैं।

एवं पुण्यारण्यानि चावृतानि वनानि च ।
तन्मध्येऽशोक वनिका सर्वेषामप्यगोचरा ॥
परमानन्ददा सान्त ब्रह्म ज्योतिर्भिरावृता ।
तज्ज्योति र्भेदने शक्ता रसिकाः रसवेदिनः ।
राम प्रसादादन्येषां गमनं न भवेत्कदा ॥
पुंसामगोचरं स्थानं केवलं प्रेमदायकम् ।
नारीभाव समायुक्तस्तेषां दृश्यं भवेद्ध्रुवम् ॥
(श्रीहनुमत्संहिता अ० ३)

अर्थात् श्री प्रमोद बन अनेकों पुण्य बन उपबनों से आबृत हैं। उन के मध्य में श्रीअशोक वाटिका है। यह वन सर्व साधारण के लिये अगोचर है। क्योंकि चारो ओर बाहर से परमानन्दमयी ब्रह्म ज्योति इस बन को घेरे हुई है। इस ब्रह्म ज्योति को पार कर भीतर बन में जाने में केवल रस तत्वज्ञ रसिक जन ही समर्थ हैं। श्री जानकी रमण जू की विशेष कृपा

प्रथमखंड (तल्ला) चारो तरफ स्फटिक मणि की दीवाल और भूमि है। उस पर नील हरित पीतादि मणियों की वेलियाँ बनी हैं। वेलियों के मध्य मध्य में पद्मराग मणि के बूटे हैं, और मणियों की जाली बनी है। उसके प्रान्त भाग में चारों तरफ मणि कणियों की वेलियाँ बनी हैं। वेलियों के मध्य-मध्य में कहीं नील मणि के बूटे, कहीं पीत मणि के बूटे, इसी प्रकार अनेक रंगों के बूटे बने हैं।

के बिना इस बन में किसी का प्रवेश असम्भव है। श्री अशोक बन तो विशुद्ध प्रेम देने वाले हैं। यह पुरुषों के लिये तो अगोचर हैं। केवल नायिका भावाविष्ट रसिक जन ही इन्हें ध्यान में या प्रत्यक्ष दर्शन कर सकते हैं। यथा-

(श्रीचित्र निधिजी के हुये-श्रीरसिकप्र०)
भक्तमाल पृष्ट ४८ । १८

"विपिन अशोक जहँ नित्य राम थली तहाँ,
अलिन समेत लली दरश दिखायो है।"

दुःप्रवेशा जनानां सा देवानामपि वाटिका।
रामस्य पुरुषेन्द्रस्य सम्भोगारम्भ कारणात् ॥ ४३ ॥
नैतादृशी सुरेन्द्रस्य नागेन्द्र वरुणस्य च।
न कुबेरस्य नान्येषां देवानां रतिवाटिका ॥ ४४ ॥

अर्थात् श्री अशोक वन में क्या मनुष्य, क्या देवता कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता, क्योंकि पुरुषेन्द्र राघवेन्द्र जू यह ऐकान्तिक विहार स्थली है ॥४३॥ ऐसी रति वाटिका न तो इन्द्र की है, न शेषजी की, न बरुण की, न कुबेर की, न किसी अन्य देवता की ॥४४॥

दालानों के अवकाशों की दीवालों पर अनेकों चित्राम बने हैं। किसी दालान में पीत रंग के, किसी में हरित रंग के किसी में नील रंग के, इसी तरह से भिन्न-भिन्न रंगों के चन्दोवे टँगे हैं। चन्दोवों के चारो तरफ प्रान्त भाग में सोनैले, रुपौले की बेलियाँ बनी हैं। मोतियों की झालर लगी है। चन्दोवे के मध्य भाग में कहीं सूर्य के, कहीं चन्द्रमा के, आकार बने हैं। दालानों की नीचे वाली भूमिका (गच्ची) कहीं नील, कहीं पीत, कहीं हरित मणियों से खचित है।

न नागानां न दैत्यानां न च दानव रक्षसाम्।
तत्तुल्य वनिका विष्णो वैंकुण्ठेपि न विद्यते ॥ ४५ ॥
दुःखैक भाजनानां तु मनुष्याणां कुतस्तराम्।
यस्याः स्मरण मात्रेण नृणां शोको विनश्यति ॥ ४६ ॥
मत्त नागेन्द्र रूपेण पुण्यलोक विनायकः।
आदेशाद्राम चन्द्रस्य तां रक्षति यक्षराट् ॥ ४७ ॥
(श्रीशिव संहितो अ० ५)

ऐसी वाटिका नाग, दैत्य, दानव, राक्षस, किसी को नहीं है। बैकुण्ठ विहारी विष्णु भगवान् को भी ऐसी बाटिका नहीं है ॥४५॥ तब भला दुखों के पात्र मनुष्यों को कहाँ से होगी। श्री अशोक बन के स्मरण मात्र से मनुष्यों के शोक मिट जाते हैं ॥४६॥ श्रीकोशलेन्द्र कुमार जू की आज्ञा से पुण्यलोक विनायक यक्ष राज मत्तनागेन्द्र रूप से इसकी रक्षा करते हैं ॥ ४७ ॥

उस पर रेशमी जाजिमें बिछी हैं। उनमें यूथ की यूथ नायिकाएँ अवस्थाओं के भेद से अनेकों तरह के बाजे बजाकर गान कर रही हैं।

इस प्रकार से कोटों के बारह खंड (आवरण) हैं। पुनः प्रथम कोट के दूसरे तल्ले में नीलमणि की दीवाल है। उस पर श्वेत पीतादि रंगों की पूर्वोक्त रचनाएँ हैं।

तीसरे तल्ले की दीवाल पीतमणि की है। उस पर और रंगों की मणियों के बेलिबूटे कढ़े हैं। और सब रचनाएँ पूर्वोक्त की भाँति जानना, केवल रंगों में भेद है।

इस भाँति चतुर्थ तल्ले में पद्मराग मणि की दीवाल, पंचम तल्ले में हरित मणि की, षष्ठम तल्ले में धूम्र मणि की, सप्तम तल्ले में पाटल मणि की, अष्टम तल्ल में वैडूर्य मणि की, तथा नवम तल्ले में पांडुर मणि की दीवाल उसी भाँति बनी है।

अशोक वनिका तत्र योजने द्वय विस्तृता।
आयता योजने द्वे च सरयूतीरमाश्रिता ॥
'श्रीशृङ्गार रहस्यरत्न मंजरी'

अर्थात् श्री सरयू तीर पर स्थित श्री अशोक वनिका दो योजन (१६ मील) लम्बी, दो योजन चौड़ी है।

वाटिका अशोक तामैं थोक थोक प्रमदा गन,
ओक ओक चौकी हूँ में ठाढ़ी हुशियार हैं।
बाहर से भीतर कौ परिकर बिनु। अति अगम्य
चोपदारी नारी कर कनक दंड धार हैं ॥

प्रथम कोट के चारों तरफ चार विशाल-विशाल गोपुर❀ बने हैं। वन्दनवार आदि अनेकों रचना से युक्त हैं। दरवाजों में विशाल-विशाल वज्र के किवाड़ लगे हैं। दरवाजों के बाहर अनेकों बीर अस्त्र शस्त्र लिये रक्षा में सन्नद्ध हैं। मध्य की ड्योढ़ियों में स्त्रियों का पहरा है।

कोट के बाहर युगल युगल अवलि करके, चारो तरफ बड़े भारी-भारी अशोक बृक्ष शोभित हैं।

कोट के ऊपर कंगूरों की पाँति शोभित हो रही है। चारों कोणों के ऊपर चार कलश अनेकों सूर्य के समान प्रकाश कर रहे हैं। उनके ऊपर कृत्रिम हंस बैठे हैं। इस तरह से प्रथम कोट की शोभा है।

पुरुष बाच्य पक्षी इत्यादि हूँ अशक्य रास,
खाश महल वासिनीहै जोई को अधिकार है॥
पावै कौन पार मुख चारिहूँ लचार होत,
अशोक बनिका विहार सुख सागर अपारहै।
(श्रीसिया रसिकअलीकृत समयरसवर्द्धिनी)

॥ चौपाई ॥

❀तरु अशोक के चित्र बनाये। फाटक पर लिखि नाम जनाये॥
सिह पौरि चहुँ ओर सुहावन। बाहर बीर खड़े मन भावन॥
सजि सिंगार धनुबान सुधारे। वय किशोर मन्मथ छविहारे॥
(श्रीविदेहजाशरणजी कृत
श्रीअशोक वाटिका विलास)

प्रथम कोट और द्वितीय कोट के मध्य वाले अवकाश में श्री सरयू प्रवाह चारो तरफ घूमी है। दोनों तरफ नाना रंग मणियों के कुंज बने हैं। कुंजों के मध्य में चारो तरफ वृक्षा-वली लगी है। उन पर लता फैल रही है। मध्य में नाना रंग के फूलों की क्यारियाँ बनी हैं। उनके मध्य में कहीं वेदी, कहीं बंगले, कहीं तड़ाग, कहीं बावली इत्यादि बने हैं।

श्री अशोक वन को चारो ओर से आवृत करने वाली श्री सरयू धारा का विशद वर्णन श्रीयुगलविनोद विलास के तृतीय अध्याय के छन्द संख्या ११ से छन्द २४ तक पढ़िये।

मूल ग्रन्थ श्रीहनुमत्संहिता रास पञ्चाध्यायी के अध्याय ३, श्लोक ३ से श्लोक १६ तक, श्री अशोक वन को आवृत करने वाली श्री सरयू धारा का बड़ा ही रोचक एवं परत्व प्रदर्शक वर्णन है। ग्रन्थ विस्तार भय से सब उद्धृत नहीं किये गये। केवल तीन श्लोक अन्त वाले दिये जाते हैं।

"तन्मध्येऽशोक वनिका दिव्य पादप संकुला।
प्रफुल्लिता चारुवती श्रीमद्भ्रमर मालिनी ॥ १७ ॥

ज्योतिष्मती मणिद्वीपवती प्रेमप्रदा सती।
रामप्रिया चक्ररूपा हरिनेत्र भवावृता ॥ १८ ॥

तत्र चिन्तामणि भूमि वाञ्छाधिक फल प्रदा ॥ १९ ॥

कुंजों के मध्य में जाति जाति के पक्षी यूथ के यूथ मिल कर कल्लोल कर रहे हैं। किसी कुंज में केवल हंस के यूथ हैं। हँसों के भी अनेकों रंग वाले भेद हैं। जिन जिन रंगों के हंस हैं, उनके अलग अलग यूथ हैं।

किसी कुंज में केवल मयूरों के यूथ हैं। किसी में केवल शुकों के यूथ हैं। किसी में केवल सारिकाओं के यूथ हैं। इस प्रकार कुंजों में अनेक जातियों के पक्षी हैं।

इस तरह से श्री सरयू जी के दोनों कूलों पर कुंज बने हैं। कुंज के बाहर श्री सरयू जी के दोनों तटों पर वृक्षों की पंक्तियाँ लगी हैं। छोटे-छोटे फूल-गुल्मों की क्यारियाँ बनी हैं।

उनके मध्य मध्य-मध्य में वेदिकाएँ बनी हैं। कोई वेदिका तो षटकोण है, कोई अष्टकोण, कोई त्रिकोण, और कोई है कमलाकार। इस प्रकार अनेकों भेदों से मणिमयी वेदिकाएँ बनी हैं।

अर्थात् श्री अशोक वनिका दिव्य द्रुमों से परिपूर्ण हैं। सभी वृक्ष रमणीय एवं प्रफुल्लित रहते हैं। उन पर भ्रमर पंक्ति मड़राती रहती है। श्रीअशोक वनिका प्रकाशमयी है। इनमें मणि के दीपक जलते रहते हैं। चिन्तकों को दिव्य प्रेम प्रदान करने वाली है। श्रीजानकी रमण जू की यह वनिका अतिशय प्यारी है। यह चक्रयकार बनी है। नयनजा अर्थात् श्रीसरयू जी से घिरी हैं। यहां की भूमि चिन्तमणि से जटित है, जो मनोरथ से अधिक फल देने वाली हैं।

जितने कोण के भेद हैं, उनमें से किसी-किसी वेदिका के कोणों में मयूरों के आकार बने हैं, किन्हीं कोणों में हंस के आकार बने हैं। इस तरह अनेकों आकार से युक्त हैं। वेदिकाओं के ऊपर अनेक रंगों की रेशमी जाजिमें बिछी हैं।

श्री सरयू जी के दोनों तटों के ऊपरी भागों से लेकर गंभीर जल के भीतर तक अनेक रंग मणियों के सोपान (सीढ़ियों) बन्धे हैं। कहीं कहीं सुन्दर सुन्दर बुर्जें बने हैं। तट पर स्थित वृक्षों के प्रतिविम्ब जल में पड़ने से, अति-शोभित हो रहे हैं।

इस प्रकार से सात कक्ष* हैं।

सारे बाग की एक बागेश्वरी* हैं।

प्रत्येक कक्ष की एक एक कक्षेश्वरी है और प्रत्येक चौक की पृथक-पृथक चौकेश्वरी है। प्रत्येक कुंज में एक एक कुंजेश्वरी रहती हैं।

---

* यहाँ कक्ष से तात्पर्य आवरण का है। श्री सीताकुण्ड के बाहर ये सातों आवरण हैं। पुनः कुण्ड के भीतर पांच आवरण और हैं। सब मिल कर बारह आवरण हुये जैसा पीछे पृष्ट में कह आये हैं।

* इनका नाम श्रीमती रतन मंजरी जी है। देखिये श्री रसमोद माधुरी पृ० १६ दोहा १३।

❋ अथ प्रथमावरण विहार ❋

❋ दोहा ❋

वाग अशोक अनूप के, प्रथम कक्ष के द्वार ।
सखियन युत सियलाल जू, शोभा जोह अपार॥१॥

❋ चौपाई ❋

सखिन नगारे चोष दये जब । कुञ्ज २ प्रति शब्द भये तब ॥
बहु कुंजेश्वरि अरु कक्षेश्वरि । सहित समाज चलीं वागेश्वरि
बहु थालन पूजन के सामा । चली मोदभरि उमगत वामा॥
धरी भेंट पिय प्यारी आगे । करि पूजन बोली मृदु वागे ॥
आज सनाथ भई हम सब विधि ।
पिय प्यारी जो मोहि लियो सुधि ॥
भये मनोरथ सुफल हमारे । अब चलिये मम कुञ्जन प्यारे ॥
पिय प्यारी अमृतमय वानी । वागेश्वरि बहुविधि सनमानी॥
सखियन युत वागेश्वरी, गान करत उमगन्त ।
पट पाँवड़े दिवाय कै, लै चलि❋ सीताकन्त ॥ २॥

❋ सवैया ❋

❋आवत जानि किसोर किसोरी अशोक महावन भूमि सोहाई ।
फूलि उठो द्रुम गुल्म लता नव कोमल डारन पातन छाई ॥
कंज सरोवर में विगसे तिन ऊपर भौंर रही मड़राई ।
वीथिन वीथिन सीतल मन्द सुगन्ध समीर बही सुखदाई ॥
(श्रीअवध सागर १ । ३९)

प्रथम कच्छ के मध्य में, कुंज सु परम विशाल।
ता मधि सिंहासन विरचि, बैठाये सियलाल ॥३॥

विधि विधानसे पूजिकै, भोजन विविध कराय।
करि निवछावर आरती, नृत्य कियो गुन गाय ॥४॥

चहुंदिशि अलि उड़गन अवलि, मध्य सीय पिय चंद।
बागेश्वरी चकोरिका, निरखत छकि आनन्द ॥५॥

कछुक काल तहँ विलमि पिय, संग सीय सखिजाल।
चले विलोकन कुंज बहु, जहँ रचना के शाल ॥६॥

प्रथम गये हंसन के वासू। देखत कुंज मनोहर तासू ॥
चहुँदिशि मनिमय महल सुहाई। मध्य वेदिका अति मनभाई
तेहि पर बैठे मनहर जोरी। चहुँ दिसि सोहै नवलकिशोरी॥
आये हंसन यूथ घनेरे। रंग रंग के जो बहुतेरे ॥
मोती ताहि चुगाये दोऊ। पिय प्यारी छवि निरखत सोऊ॥
पिय बोले सुन हंसन अवली। यहि जगमें अतिहैं का धवली
है का साँच सार यहि जग में। कहौ असार अहै का सबमें॥
हंसन कह सुनु लाल सुजाना। राउर जस सम धवल न आना
सियपिय युगल सुसेज विहारा। यहि सम सार न कछुसंसारा
जो जन दम्पति रस अवगाही। सो तौ जगमें सार कमाही ॥
यह रस छाड़ि जो और संचन। ताहि असार कहत श्रुतिसज्जन
यह रसते जो मनफिरवायो। सो यहि जगहि असार कमायो

हंसन के यह बचन सुनि, पिय प्यारी मुसुकांहि ।
दै गलबाँही सखिन युत, चले अपर थल माँहि ॥७॥

नील मनिन मय महल घनेरे । अति विस्तार बने चहुँ फेरे ॥
नील मनिन खंभन की पाँती । नील पिधान बने बहु भाँती ॥
बृच्छन की अवली बहु तेरे । शाखा पत्र नील रंग केरे ॥
ता मधि मोरन यूथ घनेरे । ऋतु पावस भ्रम किये बसेरे ॥
सखियन यूथ लिये पिय प्यारी । आये तहाँ निकुञ्जविहारी ॥
आये मोर यूथ बहु रंगा । विचरत जहँ सिय प्रीतम संगा ॥
पिय प्यारी के छबि सुखभरिके। बहुविधि नाचे थिरकिरके॥
भरिर मूठिन दानासखियन । लगीं खवावन तिन सब मोरन

नाट्य कला बहु भेद के, नाचि दिखाये मोर ।
चले देखि नृप नन्दिनी, रसिक राज सिरमौर ॥८॥

कीर कुंज पहुँचे रघुनन्दन । संग लिये सखियन के बृन्दन ॥
देखे कीरन जाति सुहाई । रंग रंग के जे बहुताई ॥
सित कोइ लाल हरे रंग कोई । स्यामल कोइ पीत रंग कोई ॥
इक के हरित बने सब अंगा । ग्रीवा सोहै ताहि सुरंगा ॥
कोउ सर्वाङ्ग अरुन रँग सोहै । ग्रीवा हरित रंग मनमोहै ॥
कोइ दुइ रंग तीन रंग कोई । कोइ चतुरंग पंच रंग कोई ॥
यहि विधि से बहु रंगन केरे । शुक विचरैं जहँ तहँ बहुतेरे ॥
मध्य कुञ्ज पहुँचे यह जोरी । दशरथ सुत श्रीजनककिशोरी ॥

बैठे सिंहासन पर जाई । चहुँ दिशि सोह सखी समुदाई ॥
कीरन की पाँती जुरि आई । जाति जाति की वरनि न जाई॥
सखियन चुगा चुगावन लागी । बोले पिय प्यारी अनुरागी॥
कोउ कह जय मिथिलेश दुलारी। भनै कोउ राघव जयकारी॥
कोउ प्यारी के वरनै शोभा । प्यारे छवि काहू मन लोभा ॥
कोउ प्यारे की करै बड़ाई । कोउ प्यारी गुन कहै बढ़ाई ॥
कोउ प्यारी की मुखछवि ऊपर। न्यौछावरकर अमितसुधाकर
कोउ कह प्यारे मुख छवि आगे। मदन करोरन फीको लागे॥
कोउकह हम बहुजानतनाहीं। निरखहुँ पिय अँग सियकोछांही

यहि विधि शुक सब परस्पर, पिय प्यारी गुन गाइ ।
निरखि २ छवि माधुरी, तन मन सुधि बिसराइ ॥९॥
कुंज कुंज प्रति जाइ कै, दम्पति कौतुक देखि ।
आये सरयू तट बहुरि, जल प्रवाह को पेखि ॥१०॥

तट के ऊपर दोउ दिशि राजे । वृक्षन की अवली बहु छाजे॥
लता लपटि रह ताके ऊपर । जस पतनी पति परिरंभन कर॥
फलफूलन भरिझुकीसुसाखन। जनु करती पृथ्वीको चुंबन* ।

---

* सोरठा—श्रीलड़ैती बचन--

पुष्प लता द्रुम देखि, बूझति सिय निज नाथ सों ।
कहिये नाम विशेषि, कौन लता यह कौन तरु ॥

क्यारी क्यारी फूलन छाये। तेहि पर भँवरन झुंड लुभाये॥
पवनप्रसंगसुगंधन उड़िकै। दिसिअरु विदिसि गगन रहि भरिकै
मनियन कनिकन रंग रंग के। क्यारिन पर सोहत सुढंगके॥

❀ नायक वचन। कवित्त ❀

देखु प्रान प्यारी ये अशोक वाटिका सँवारि
तेरेई अनूप रूप गुन की जु भास है।
कंचन अवनि तन वदन सुकंज वन
विंबाधर दाड़िम दसन कुंद हास है॥
श्रीफल उरोज लता रोम राजी रंग अरु
पल्लव अरुन कर चरन प्रकाश है।
नील कंज लोयन अरुन कंज कोयन
रसाल गंड कुण्डल कदंब सुखरास है॥४२॥
सिरस सुमन सुकुमारता भुजंग केस
भृकुटी द्विरेफ पंक्ति कवरी तमाल है।
वसन हरित पर्ण कंचुकी विचित्र वर्ण,
बिबिध सुगन्ध अंगराग पुष्प माल है॥
पनस नितम्ब गोल कूज खग मंजु बोल
गुंजत भ्रमर पद भूषन रसाल है।
कंदुक नारंग फल निर्तत मयूर कल
प्यारी तोहि पाय याके खुले भाग भालहै॥४३॥
(श्रीअवध सागर, दशवाँ रत्न)

मनियन के सोपान बन्धे हैं। जहँ तहँ बहु चित्राम सधे हैं ॥
श्री सरजू जल स्वच्छ बहुत है। चन्द्रकिरन छवि दूरि करतु है॥
पुनि गोक्षीर शंख दुति काहीं। छीन लई छवि अतिभ्रलकाहीं
अमिय स्वादु को मान नवावै। जल को स्वाद कौन बतलावै

जलानि शीतांशु करा कराणि गोक्षीर शंख द्युति निर्जितानि।
सुधा शरन्मेघनिभानिकानि श्रीमेदुर श्याम यशांखितानि ॥६॥
हिमागमाच्छीत विडंबितानि स्वादूनि माध्वीकरसाद्धनानि।
स्वच्छानि सच्चित्तसमानि कानिकपूर कुन्दाद्भुतदर्शनानि॥ ॥
प्रफुल्लितं चारु चतुर्विधं महत्सरोरुहं षटपद राजि वेष्टितम्।
कुमुद्वतीन्दीवर मजु मडितं कह्लारकाह्लाद जलं व्यभासत् ॥१०॥
(श्रीहनुमत्संहिता रास पंचाध्यायी अध्याय)

अर्थात् श्री सरयू जल अपनी शुभ्रता से चन्द्र किरण समूह, गौ दूध और शंख की उज्ज्वला को जीत रहा है। इसे शरद् के शुभ्र वादल एवं श्याम सलोने जू के सुयश के समान शुभ्र कहें, तो कोई अत्युक्ति नहीं। श्री सरयू जल शीतलता में हिम ऋतु की ठंढक को उपहास करता है तथा स्वाद में दाख से बढ़ चढ़ कर है। सज्जनों के चित्त तथा कर्पूरकुन्द से भी अधिक सौगन्ध्य एवं शुभ्रता इसमें दर्शित होती है।

श्रीसरयू जल में चार प्रकार के कमल खिले हैं। उन्हें भ्रमरों की पंक्ति घेरे हुई है। मंजुल कुमुद, नील कमल, श्वेत कमल से अलंकृत जल बड़ा ही आह्लाद दायक प्रतीत होता है।

क्यारी क्यारी फूलन छाये। तेहि पर भँवरन झुंड लुभाये॥
पवनप्रसंगसुगंधन उड़िकै। दिसिअरु विदिसि गगन रहि भरिकै
मनियन कनिकन रंग रंग के। क्यारिन पर सोहत सुढंगके॥

❀ नायक वचन। कवित्त ❀

देखु प्रान प्यारी ये अशोक वाटिका सँवारि
तेरेई अनूप रूप गुन की जु भास है।
कंचन अवनि तन वदन सुकंज वन
विंवाधर दाड़िम दसन कुंद हास है॥
श्रीफल उरोज लता रोम राजी रंग अरु
पल्लव अरुन कर चरन प्रकाश है।
नील कंज लोयन अरुन कंज कोयन
रसाल गंड कुण्डल कदंब सुखरास है॥४२॥
सिरस सुमन सुकुमारता भुजंग केस
भृकुटी द्विरेफ पंक्ति कवरी तमाल है।
वसन हरित पर्ण कंचुकी विचित्र वर्ण,
विविध सुगन्ध अंगराग पुष्प माल है॥
पनस नितम्ब गोल कूज खग मंजु बोल
गुंजत भ्रमर पद भूषन रसाल है।
कंदुक नारंग फल निर्तत मयूर कल
प्यारी तोहि पाय याके खुले भाग भाल है॥४३॥
(श्रीअवध सागर, दशवाँ रत्न)

मनियन के सोपान बन्धे हैं। जहँ तहँ बहु चित्राम सधे हैं ॥
श्री सरजू जल स्वच्छ बहुत है। चन्द्रकिरन छवि दूरि करतु है॥
पुनि गोक्षीर शंख दुति काहीं। छीन लई छवि अतिझलकाहीं
अमिय स्वादु को मान नवावै। जल को स्वाद कौन बतलावै

जलानि शीतांशु करा कराणि गोक्षीर शंख द्युति निर्जितानि।
सुधा शरन्मेघनिभानिकानि श्रीमेदुर श्याम यशांसितानि ॥६॥
हिमागमाच्छीत विडंबितानि स्वादूनि माध्वीकरसाद्धनानि।
स्वच्छानि सच्चित्तसमानि कानिकपूर कुन्दाद्भुतदर्शनानि॥ ॥
प्रफुल्लितं चारु चतुर्विधं महत्सरोरुहं षटपद राजि वेष्टितम्।
कुमुद्वतीन्दीवर मजु मडितं कह्लारकाह्लाद जलं व्यभासत् ॥१०॥
(श्रीहनुमत्संहिता रास पंचाध्यायी अध्याय)

अर्थात् श्री सरयू जल अपनी शुभ्रता से चन्द्र किरण समूह, गौ दूध और शंख की उज्ज्वला को जीत रहा है। इसे शरद् के शुभ्र वादल एवं श्याम सलोने जू के सुयश के समान शुभ्र कहें, तो कोई अत्युक्ति नहीं। श्री सरयू जल शीतलता में हिम ऋतु की ठंढक को उपहास करता है तथा स्वाद में दाख से बढ़ चढ़ कर है। सज्जनों के चित्त तथा कपूरकुन्द से भी अधिक सौगन्ध्य एवँ शुभ्रता इसमें दर्शित होती है।

श्रीसरयू जल में चार प्रकार के कमल खिले हैं। उन्हें भ्रमरों की पंक्ति घेरे हुई है। मंजुल कुमुद, नील कमल, श्वेत कमल से अलंकृत जल बड़ा ही आह्लाद दायक प्रतीत होता है।

नाना रंग कमल बहु सोहै। नील पीत अरुनादिक जोहै ॥
तापर रंग रंग के भँवरन । छाइ रहे गुंजे बहु झुंडन ॥
चक्र चातक सारस बहुतेरे। जल कुक्कुट अरु हंस घनेरे ॥
जहँ तहँ प्यारी प्रीतम संगा कूजहि क्रीड़हि करि रस रंगा॥
यहिविधि देखत सरयूशोभा*। पियप्यारीके मन अति लोभा

चक्राङ्ग दात्यूह ससारि सारसा:
सदारका वै जल कुक्कुटादयः।
क्रीड़न्ति क्रीड़ां परिहृत्य सर्वे
वसन्ति यत्राकलयन्ति पक्षिणः ॥१२॥
(श्रीहनुमत्सं० अध्याय ३)

अर्थात् चकवा, चातक, सारस, जलकुक्कुट आदि पक्षी गण अपनी पत्नियों के साथ लज्जा त्याग कर क्रीड़ा कर रहे हैं, श्री सरयू जल में निवास करते हैं तथा युगल विहार विषयक वाणी अपनी भाषा में कूज रहे हैं।

❀ छप्पय ❀

*सरजू सीतलधार बहहि आनन्द रस लहरी।
चिंतत फल की दानि परम पावनि अति गहरी॥
बने मनिन के घाट तीर पंकज बहु फूले ।
मुक्ता चुगहि मराल मधुर बोलहिं अनुकूले ॥
सुभ चक्रवाक सुक पिक रटत, सारस मोर चकोर खग।
सुचि पीवत जल निर्भय रहत, मर्कटादि निज वृन्द सँग ॥
(श्रीअवध सागर ११ । ३६)

बेठे मनिमय बुर्जे ऊपर। सखियन युत पियप्यारी छबिधर॥
देखि देखि सरयू की लहरें। सब मन उठ्यो मदन की कहरे॥
सरजू पिय प्यारी को दृष्टा। आई धाइ सखिन युत हृष्टा॥
धूप दीप नैवेद वेद बिधि। पूजी पिय प्यारी मंगल निधि॥
नाना पुष्पमाल पहिराई। सब नाचन लागी गुन गाई॥
बोली मधुर मनोहर बामा। मनइप्सित करिये पियश्यामा॥
ताकी मृदुबानी सुनि प्यारी। जल क्रीड़ा की उठी खुमारी॥
पट झीने पहिरे कटि माहीं। सब कूदन लागीं जल माहीं॥
काचित् करन पकरिरघुनंदन। जलअगाध डारत अतिमुदमन
कोइछल करिपिय अंगनऊपर। गिरि लैजाइ पकरि जलभीतर
सबविधि करति मनोरथपूरन। अतिनिशंक नहिं करतिशंकमन
जुगमिलि निज२बाँहजोरिकरि। जल प्रवाहमें तैरति सुखभरि
कोइभय करि प्रीतमकटिपकरी। लिपटिरही पियअङ्गनजकरी
काचित् अंशुक जल प्रवाहमें। छूटि गई ही भइ अति मन में
ऊँचे चढ़ि कोउ कूदे जलमें। जनु दामिनि प्रवेशकर घनमें॥
जल उलचै बहु तिन पै कोऊ। अतिगहिरे जल बोड़त सोऊ॥
कोउ के पिय चोली बँदतारे। सखियन मिलि प्रीतमको घेरे।
मुख चूमै पिचकारी मारे। हार कहावै जयति उचारे॥
कोइ सखि पियसंग होड़लगावै। हारि जायपिय नाचनचावै

अति अनन्द जल में मच्यो, पिय प्यारी अलि साथ।
हास्य अपर कछु करन हित, वसन हर्यो सिय नाथ ॥११

सारी इक नारी की छीने। बाहर आय कहत रँग भीने ॥
काकी सारी अहै सुहाई। जल सो निकसि लेहु सो आई ॥
वह लज्जित जलभीतर ठाढ़ी। कहन व्यंग प्रीतम रुचिबाढ़ी।
सकुचौ जिन ममआगे आवो। बहुविधि अंगपरसि सुखपागो
सुनि बहु नारि पियाको घेरी। वड़े चपल पिय जाइ न पकरी
पुनि तिनहूँ की सारी छोरी। हसत दिखाय बजाय हथोरी॥
बोली तब सिय मन सबनारी। स्वामिनि राखो लाज हमारी
दैडुबकी सिय पिय ढिग आई। गहि बोलो पिय बचन रमाई
छोन लई पिय सौ सब सारी। सखियन कहँ पहिरायो प्यारी

जनकलली हँसि कै कह्यो, मधुर रसीले वैन।
निजर अलिगन विलगकै, सजहु जुगल दिसिसैन॥१२।

जल विहार का प्रसंग इससे मिलता जुलता श्री युगल विलास के पाँचवे अध्याय के छन्द ५ से छन्द ३७ तक पढ़िये। पुनः श्रीहनुमत्संहिता रास पंचाध्यायी के अध्याय ५ श्लोक ५ से १६ तक भी द्रष्टव्य है।

उत प्रीतम दिसि राजति सखियाँ।

इत सिय संग खड़ी रुख लखियाँ॥

कर पिचकारी दुहुंदिसि मारै। उलचत जल गहि गहिरे डारै

उझकि पिया प्यारी मुख चूमत। कुंडलकेश उरझि नहि छूटत

दुहुँ दिसि हँसि२ कह सबआली। उरझे सदा रहो रसख्याली

चतुर सखी हँसि२ निरुवारति। व्यंग राग गावै मन भावति

कर कर गहि नाचे जल ऊपर चंचल चरननि बाजत नूपुर॥

छम२ थेइ थेइ तानन गावति। पिय प्यारी की बलि२ जावति

सियजल उलचतपिय मुखमाहीं। आवतबाहरपुनिफिरि जाहीं

बिकल होत क्यों प्रीतम प्यारे। आजु वीरता कहाँ बिसारे।

हारि वदो तब बाहर आवो। नाहि त जल में रंग मचायो॥

बार बार पिय कह हम हारे। जयतिसीय जय बचन उचारे॥

प्यारी हृदय लगायो प्रीतम। करति निछावर मनिगन उत्तम

श्री रसमालिका के सातवे अवकाश के प्रारम्भिज चंचरीक, हरिगीत और द्वितोय चंचरीक छन्द भी जल विहार के हृदयग्राही वर्णन करते हैं।

यहि विधि जल क्रीड़ा* कियो, सिय पिय बाहर जाय ।
भूषन वसन सँवारि अलि, अँग अँग सजे बनाय ॥१३॥

मधुर भोग बहु ल्याय कै, दंपति को अरपाय ।
सिय पिय पावत प्रेम सो, शेष सखिन बरताय ॥१४॥

मुख प्रछालि कर पोंछि कै, पान मसाले पाय ।
सखिन उतारति आरती, बहु विधि लेति बलाय ॥१५॥

यहि विधि प्रथम सुकत्त में, करि विहार बहु रंग ।
दुतिय कत्त को चलत भे, सिय पिय सखियन संग॥१६॥

* इति श्रीअशोकवाटिकायां प्रथमावरण वर्णनम् *

---

* श्री विदेहजाशरणजी महाराज ने स्वरचित श्री अशोक-वाटिका विलास के प्रथम विलास में श्रीअशोक वनिका वाली श्री सरयू धारा में नौका जल विहार का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। ग्रन्थ विस्तार भय से यहाँ उद्धृत नहीं हो सका।

श्री अशोक वाटिका का द्वितीय कक्ष

(षटऋतुकुञ्ज आवरण)

द्वितीय आवरण के नव तल्ले कोट महल का स्वरूप बर्णन :—

❋ वार्ता ❋

द्वितीय कक्ष (आवरण) का कोट । प्रथम खंड (तल्ला) चारो तरफ पीत मणि की दीवाल है, उसके ऊपर और मणियों के बेलिबूटे, और रचनाएँ, दरवाजे, झरोखे आदि बने हैं।

अनेक रंगों के जड़ीदार परदे पड़े हैं। दालानों में तीन तीन हाथ की कुर्सियाँ सजी हैं। उनमें अनेकों रचनायें बनी हैं। दालानों के अवकाशों में ऊपर चान्दनी तनी है। उसमें झब्बे झालरें लगी हैं। परदों में तथा चान्दनी में, चारो तरफ किंकिणी लगी हैं। पवन के प्रसंग से उसके शब्द बराबर हुआ करते हैं।

दीवालों में अनेक रंगों के चित्राम बने हैं। श्रीप्रिया प्रियतम जू के बाल, विवाह आदि चरित चित्रित हैं। मध्य के अवकाशों में रंग विरंग के फरश बिछे हैं।

प्रत्येक दालान में यूथ की यूथ नायिकायें कल्लोल कर रही हैं। अनेकों तरह के खेल खेल रही हैं।

कोट के द्वितीय खंड (तल्ले) की दीवाल नील मणि रचित है। उस पर और रंग मणियों की रचनाएँ बनी हैं। और सब पूर्वोक्त बातें जानना।

तृतीय खंड में श्वेत मणि की दीवाल पर और मणियों की रचनाएँ बनी हैं।

चतुर्थ खण्ड में पद्मराग मणि की दीवाल और मणियों की रचनाएँ, पंचम खंड में हरित मणि मयी दीवाल पर और मणियों की रचनाएँ, षष्टम खंड में वैदुर्य मणि मयी दीवाल, सप्तम खंड में श्याममणि मयी दीवाल, अष्ट खंड में धुम्र मणि-मयी दीवाल, नवम खंड में पांडुर मणिमयी दीवाल पर अन्या-न्य मणियों की रचनाएँ हैं।

उनके ऊपर चारों तरफ कंगूरों की पाँति शोभित हो रही है। ऊपर बैठे हुये अनेक रंगों के कृत्रिम पक्षियों से वह शोभित हो रही हैं। चारों कोनों में चार कलश विलस रहे है। वे अनेकों सूर्य की प्रभा को हरण कर रहे हैं। उन कलशों पर कृत्रिम मोर बैठे हैं।

कोट के चारो तरफ विशाल विशाल गोपुर❀ बने हैं। प्रत्येक गोपुर पर अनेकों स्त्रियों का पहरा पड़ रहा है।

कोट की दीवालों में अनेकों तरह की नकल बनी है, जो कि साक्षात् की भाँति दर्शित होती हैं।

❀ त्रिकद्वारी गोपुर चहुँ ओरी। प्रतिहारिन ठाढ़ी रस बोरी॥
[श्रीअशोक वाटिका विलास]

कहीं पर समुद्र की नकल बनी है। जहाँ तक नेत्र जाता है, सर्वत्र जलमय दिखाई देता है। उस जल के भीतर कहीं बड़े विशाल-विशाल मगर बिचर रहे हैं, कहीं पर बड़े-बड़े मीन यूथ के यूथ जल में चल रहे हैं। इसी तरह से जो जो जीव समुद्र के रहने वाले हैं, सभी वहां दीख पड़ते हैं। तरंगके युक्त समुद्र साक्षात् की भाँति दर्शित होता है।

कहीं पर बन की नकल बनी है। उसमें अनेक जातियों के बृक्ष लगे हैं। बृक्षों के ऊपर जहाँ तहाँ अनेक तरह के पक्षी बैठे हैं। बहुत से पक्षी भूमि पर जहाँ तहाँ बिचर रहे हैं। कहीं पर यूथ के यूथ गज बिचर रहे हैं। कहीं झुण्ड के झुण्ड मृग बिचर रहे हैं। कहीं सिंह विचर रहा है। कहीं सिंह हाथी का मस्तक विदीर्ण कर रहा है। जहाँ तहाँ बड़े-बड़े ऋषि समाधि लगाये बैठे हैं। इसी तरह बन और जहाँ तक बन के रहने वाले जीव जन्तु हैं, सब दीखते हैं। यह सब रचनाएँ कोट की दीवाल में साक्षात् की भाँति दीख पड़ती हैं।

बसन्ताद्यर्तवो यत्र फल पुष्प समन्विताः।
नव पल्लव नम्राग्रा भ्रमद् भ्रमर वेष्टिताः॥
[श्रीहनुमत्संहिता रासपंचाध्यायी २। २६]

अर्थात् श्री अशोक वन में वसन्त आदि सभी ऋतुओं का निवास है। यहाँ सभी ऋतुओं में वृक्ष नव पल्लवों के भार से झुके रहते हैं तथा फल फूलों से समृद्धमान् बने रहते हैं।

कहीं-कहीं बड़े-बड़े पर्वत दर्शित होते हैं। उनमें जहाँ-तहाँ झरने झर रहे हैं। झरने कहीं पर भारी, कहीं पर छोटे हैं। इसी तरह कहीं बड़े भारी-भारी शहर, शहर की बस्तुएँ, और शहर के जीव जितने होते हैं, सब यथार्थ की तरह दर्शित होते हैं।

कहीं पर श्री सरयू जी का प्रवाह चल रहा है। दोनों तटों पर वृक्षावलि लगी है। घाटों पर जहाँ तहाँ मनुष्य स्नान कर रहे हैं। कहीं ध्यान लगाये माला फेर रहे हैं। कहीं यूथ के यूथ बालक मिल कर, तट के ऊपर से जल प्रवाह में कूदते हैं। इस तरह अनेक प्रकार की नकलें कोट की दीवाल में बनी हैं। कोट के अवकाश में चारो तरफ युगल पंक्ति अशोक वृक्ष लगे हैं। तिन के मध्य में षट ऋतु कुंज हैं।* प्रत्येक ऋतु कुंज के दो भेद हैं। एक ऋतु अनुकूला, दूसरा ऋतु स्वरूपा।

---

* श्री अशोक वनिका में सभी ऋतु कुञ्जों की स्थिति श्रीशिव संहिता को भी मान्य है। यथा—

"अशोक बनिका चेयं सर्वर्तु रस पूरिता।"

श्रीशिव संहिता २०। २०)

अर्थात् यह अशोक बनिका सभी ऋतुओं के सुख से भरी है।

'बनअशोक मधि परमसुहावन। षटऋतु कुंज बने मनभावन॥
पादप बिपुल अमित नव रूपा। चिन्मय विग्रह तुरिय सरूपा॥

[श्रीसिया अलीजी कृत 'नित्यरास']

❋ ग्रीष्म कुञ्ज अनुकूला का स्वरूप वर्णन ❋

(वार्ता)

चन्द्रमणि के कुंज बने हैं। उनके दीवालों में अनेक रचनाएँ बनी हैं। कुंजों के भीतर चारो तरफ मधुर मधुर वृक्षावली लगी है। तिसके बाद चारो तरफ लताएँ लगी हैं।

दीवालों में अनेकों बड़ी-बड़ी नालियाँ लगी हैं। उन नालियों में किसी के मुख पर हजार, किसी के दश हजार, किसी के एक लाख, बारीक-बारीक छिद्र बने हैं। उन छिद्रों से अनेक प्रकारों के सुगन्धमय जल के फुहारे बरसते रहते हैं।

"द्वादश कुंज बने रितु रूपा। द्वादशरितु अनुकूल अनूपा ॥
यक यक ऋतु दुइ मास सुहाये। युग २ कुंज रितुन प्रतिभाये ॥
मुख्य कुंज चौविस चहुँओरी। चौबिस चौक छवो रितु रूरी ॥
अपर कुंजकी सख्या नाहीं। चहुँदिशि बने न बरनि सिराहीं ॥"

(श्रीबिदेहजाशरणजी कृत श्रीअशोकवाटिका बिलास)

स्वरूपा, अनुकूला के अतिरिक्त एक ऋतु आभास वाला स्थल भी है, यथा—

"इष्टकोपल रत्नाढ्यै र्बहु मध्य महीतला।
जलयंत्र प्रणालीभिः प्राविडिव विभाविता ॥"
(श्रीशिव संहिता ५ । ५५

अर्थात् हरित रत्न के ईंटों पत्थरों से जटित हरी भूमि पर जल यन्त्र की फुही पड़ने से, वहाँ वर्षाऋतु का आभास होता है।

चारो कोनों में छोटे-छोटे पहाड़ बने हैं। उनसे सुगन्ध-मय झरने झहर रहे हैं। नालियों से जो फुहारे छूटते हैं, वे वृक्षों के ऊपर, लताओं के ऊपर, झरझर गिरते रहते हैं।

तिनके मध्य चारो तरफ फूलों के महल बने हैं। उन में फूल ही की दीवाल, फूल ही के स्तम्भ, फूल ही की पुतलियाँ और फूल ही के परदे बने हैं। दीवालों में नाना रंगों के फूलों से बेलिबूटे, जाली झरोखे, खिड़कियाँ तथा तरह तरह के चित्राम बने हैं। सारी रचनाएँ फूलमयी हैं

कुजों के दालानों में तरह तरह के फूलों की शय्या बिछी हैं। उनके चारो तरफ फूलों के गमले सजे हैं। शय्या के चारो तरफ जल यंत्रों से फुहारे छूट रहे हैं।

इन फूल महलों के मध्य में चारों तरफ फूलों की रंग-रंग की क्यारियाँ बनी हैं। तिन के मध्य में कहीं फूल बंगले हैं, तथा कहीं फूल वेदियाँ हैं।

कहीं मोती के बंगले बने हैं। उनमें यावत् रचनाएँ हैं, सब मोतिनमयी हैं।

कहीं पर सुन्दर अति कोमल-कोमल दूर्वों के फरश लगे हैं।

कहीं पर चन्द्रमणि के बंगले बने हैं।❀

❀ ग्रीष्म अनुकूला में खसखाना, तहखाना भी सम्मिलित किया जा सकता है। श्री कृपानिवास स्वामी के मत से चन्दन का साज भी ग्रीष्म अनुकूला के लिये उपयुक्त है, यथा—

इस प्रकार बाहर सर्वत्र ग्रीष्म ऋतु बरत रही है। परन्तु यहाँ हिम ऋतु तद्वत सुखदायक कुंज बना है।

इस प्रकार का ग्रीष्म अनुकूला समझना।

❁ ग्रीष्म स्वरूपा कुञ्ज वर्णन ❁

(वार्ता)

ग्रीष्म स्वरूपा कुंज में सभी रचनाएँ सूर्यमणि की हैं। सूर्यमणि के ही कुंज, बंगले, बेदिका आदि बनी हैं। ग्रीष्म का जैसा स्वरूप होता है, वह यहाँ सब दिन बना रहता है। यह कुंज केवल हिम ऋतु में ही भोग्य है।

इसी प्रकार प्रत्येक ऋतु स्वरूप कुंज को समझना। जिस ऋतु का जैसा स्वरूप होता है, उसी तरह से यहाँ सदा दिखाते रहते हैं।

चन्दन विभूषन बसन तन चन्दन के
चन्दन सुराग भोग चन्दनी विहारवर।
चन्दन के हार हिय लिये हाथ पुष्प डार
चन्दनके हौजवर चन्दन फुहार झर॥
चन्दन भा चान्दनी ज्यों उभे चन्द सीतावर
चन्दन सुगन्ध मन्द शीतल समीर तर।
चन्दन निवास अली चन्दन उपास हित।
चन्दन प्रकास सम चन्दनी विलास कर॥

और ऐसा भी है कि एक ही ऋतुकुंज समय समय पर छवों ऋतुओं के धर्म एक ही ऋतु में दर्शाता है। ऐसी मणि विशेष की सामर्थ्य है।

❀ अथ ग्रीष्म कुंज विहार ❀

दोहा:—

द्वितीय कक्ष के द्वार पर, गज रथ पर असवार।
आये सखिन समाज युत, रचना लखत अपार❀ ॥१॥

❀ सोरठा ❀

आवन सुनि पिय प्यारि, कक्षेश्वरि कुंजेश्वरी।
सौजें सकल सँवारि, आइ मिली अहलाद से ।२॥
करि पूजा सतकार, पट पाँवड़े दिवाइ के ।
ले आई निज द्वार, छत्र चँवर व्यजनादि युत् ॥३॥
भोजन विविध कराइ, सिंहासन बैठाइ कै ।
बीरी ललित बनाई, दइ दम्पति मुख कंज में ।४॥

❀ सवैया ❀

❀रूप धरे बन देवी अनूपम दम्पति रूप निहारि सिहाहीं।
सिन्धु नदी गिरि तीरथ कानन आनि बसे सगरे वन माहीं ॥
रागिनि राग सबै रितु मास प्रिया पिय की रुचि लै प्रगटाहीं।
नव निधि सिद्धि अठारह आइ निहारहि दम्पति की गलबाहीं॥

(श्रीअवध सागर ११।४०)

अतरन घ्रान कराइ, करि आरति मुख निरखि कै ।
कियो नृत्य गुन गाइ, लेत वलैया दुहुँन की । ५ ॥

* चौपाई *

ग्रीष्म कुंज आये मनभावन । रचना देखन लगे मुदित मन ॥
फूलन भूषन वसन बनाई । सखियन पिय प्यारी पहिराई ॥
फूलन क्रीट चन्द्रिका सोहै । फूल श्रवण भूषन मन मोहै ॥
फूलन वंदी बेसर फूलन । फूलन गोप बने मन मोहन ॥
फूल बिजावट बाजू फूलन । फूल वलय कंकन सुठिसोहन ॥
फूलन माला बहु रंग सोहै । प्रीतमप्यारी छबि दरसोहै ॥
फूल कंचुकी कंचुक फूलन । फूलन सारी धोती फूलन ॥
फूलन गुच्छ लिये कर प्यारी । फूल छड़ी प्यारे कर धारी ॥
फूलन के शृङ्गार बनाई । नख सिख पिय प्यारी पहिराई ॥
सखिन परस्पर निज २ अंगे । फूल शृङ्गार सजे नव रंगे ॥
सखिन सहित पियप्यारी बनठन। रचना फूललगे अवलोकन
फूलनमय गेंसो पर फिरहीं । फूलन चोट परस्पर करहीं ॥

फूलन ते खेलत बहु खेलन । आय जहाँ झरना झर जलकन
बैठे फटिक सिला दोउप्यारे । सहन लगे झरना की धारें ॥
अतिसुकुमारी जनकदुलारी।सहिनहिसकी निकसि भइन्यारी

बोले प्यारे वीर की बेटी । ह्वै कर भागति हौ दै पीठी ॥
सिय बोली सुनु राजदुलारे । जलकन सहन वीरता धारे ॥
जानौ वीर वाप के बेटा । जौ तुम सहिहौ मैन चपेटा ॥

यहि विधि कौतुकमय बहु बातें । करि दोउ चले रंग रसराते
आये मधि बंगले फूलन के। फूल सेज जहँ मयन अयनके ॥
तापर बैठि उमगि दोउलालन।करनलगे बहुबिधिरसख्यालन

❋ दोहा ❋

सखिन सिंगारे नवल दोउ, सिंहासन बैठाइ ।
मधुर सु भोग लगाइ कै, आरति करी सुहाइ ॥
सावन कुंज हिंडोल सुख, लूटन को दोउ लाल ।
परिकर सखियन संग लै, चले बैठि सुखपाल ॥

❋ इति ग्रीष्म कुंज बिहार वर्णन ❋

पावस कुञ्जान्तर्गत श्रावण हिंडोल विहार :—

॥ श्रावण कुञ्ज का स्वरूप वर्णन ॥

❋ चौपाई ❋

हरित मनिन के चहुँदिसि महले । सावनकुञ्ज मचै जहँ चहले
हरित मनिन खंभावलि राजै । तामें पुतली बहु विधि भ्राजै
हरे हरे बृच्छन की पाँती । राजि रहो चहुँ दिसि सुख माती ॥
ता मधि लता निकुञ्ज सुहाये । हरे हरे चहुँदिसि छविछाये॥
हरे मनिन जल यंत्र फुहारे । छूटि रहे जहँ तहँ छवि धारे ॥
फूलन की बहु जाति सुहाई । चहुँ दिसि फूलि रही मनभाई ॥
जहाँ तहाँ फूलन पर न्यारे । भँवरन की बहु भीर गुँजारे ॥
जहँ तहँ कोकिल मोर चकोरी । सारस हंस मनोहर जोरी ॥
पारावत तीतर के यूथा । बिचरहिं सावन कुंज बरूथा ॥
ता मधि बगला परममनोहर । जोहि जगै मनमाँहि असमसर
चहुँदिसि खंभावली सुहाई । हरित मनिन बहुभाँति बनाई॥
परदे हरे रेसमी सोहैं । तामें जड़ीदार बूटो हैं ॥

ग्रीषम कुंज विहार करि, पावस कुंजहि जाय ।
झूला झूलै नवल दोउ, रस वर्षा बरसाय ॥
(श्रीअशोक वाटिका विलास)

चहुँ दिसि किंकिन लगी सुहाई। रुनझुन शब्द करै मनभाई।
चँदवा हरे रंगे के सोहै। झब्बे झालर लखि मनमोहै॥
१झार फनूस हरे रंग को है। लट्टू ललित हरित मनमोहै॥
ताके मध्य हिंडोरा राजै। पटुली छतुरी बहु विधि भ्राजै॥
कहँ लगि करौं हिडोल बड़ाई। काम निपुन बहु जतन बनाई
तेहि कुञ्जन आये पियप्यारी। निरखत रचना भा सुखभारी२
धूप दीप नैवेद वेद विधि। कुंजेश्वरी पूजे दोउ रसनिधि॥
३बैठे ललन हिडोरें जाई। लगी झुलावन सखि सुखदाई॥

१—श्री विदेहजा शरणजी महाराज के मत से श्रावण कुंज का प्राङ्गण भी हरे रंग का है, यथा—

चहुँदिशि कोट चारि दरवाजे। हरित अजिरमधि झूलन साजे॥
(श्रीअशोक वाटिका विलास)

❁ दोहा ❁

२—राज सुवन रुख पाइ कै, छाये घन चहुँ ओर।
वन अशोक थल छाइ कै, गर्जत बरसत घोर॥
घुमड़ि रह्यो सो रास रस, वन अशोक भरिपूरि।
बाहेर जन जानहि नहीं, बरसत है घन भूरि॥
(श्रीअवध सागर १०।३४,३५)

३—महारास के उपरान्त, श्रीअशोक वन विहार के सिलसिले में श्रीयुगल विनोद विलास ग्रन्थकर्त्ता जू कहते हैं :—

भीने विमल विहार सुरस दम्पति गमने तहँ।
नवल हिडोल सुकुंज कलित कामद राजत जहँ॥

रस रस पेंग बढ़न जब लागे। प्रीतम प्यारी रस में पागे ॥
रस की चोट चलावत हँसि२। अरस परस रस अंगन गसि२
बहुसखि यंत्र बजावनलागी। बहुसखि नाचत अतिअनुरागी
बहु सखि स्वर लै तान अलापै। राग मलार अंग सब थापै॥

यहि बिधि सावनकुंज में, करि विहार दोउ लाल।
सरद् कुञ्ज की सुरति करि, चले संग सब बाल ॥

॥ इति पावस कुंजान्तर्गत श्रावण हिंडोल विहार ॥

प्रेम प्रदरशिनि सखी अमित विधि पूजि परम प्रिय।
झूलन बीच झुलाय आप झूली सनेह हिय ॥
गान तान रसखान सहित प्रीतम रिझाय अति।
निज अभिमत सब रीति करी पूरन विचित्र मति ॥
[अध्याय ५। ६५, ६६]

श्री हनुमत्संहिता रासपंच अध्याय भी देखिये।
[अध्याय ५, श्लोक ४५]

❀ अथ शरद् कुञ्ज बिहार ❀

॥ दोहा ॥

आये सरद् सु कुंज में, पिय प्यारी सुख धाम।
रचना देखि अनेक विधि, पायो मन आराम ॥

❀ शरद् कुञ्ज का स्वरूप वर्णन ❀

वार्ता)

चारो तरफ स्फटिक मणि के विशाल कुंज बने हैं। कुंजों की दीवालों में नाना प्रकार की रचनाएँ बनी हैं। तिनके मध्य में चारो तरफ लता वृक्ष शोभित हैं। तिन के मध्य चारो तरफ फूलों की क्यारियां बनी हैं।❀

❀ रसिक सम्राट् श्रीमत् अग्रदेवायाचार्य जू ने श्री अशोक वन के रासकुञ्ज की रचना का बड़ा ही हृदयग्राही शब्द चित्र अङ्कित किया है—

श्री सरयू तट वन अशोक मधि, रास रच्यो श्री अवध विहारी।
चहुँ दिसि मनिमय कोट बिराजे, मध्य कुंज बहु न्यारी न्यारी॥
ताके चहुँ दिसि पादप राजै, त्रै संपति युत अति रुचिकारी।
ता आगे बहु लता कुंज हैं, जाति जाति की न्यारी न्यारी॥
ताके चहुँ दिसि कृत्रिम पादप, जाति जाति मनिके छवि भारी।
ताके चहुँ दिसि गमले सुन्दर, बहुत भाँति के धरयो सुधारी॥
ताके चहुँ दिसि मोतिन झालर, मध्य में रचना बहुत प्रकारी।
मध्य भूमि बहु रंग मनिन के, वेली बूटा बहुत प्रकारी॥

फूलों के ऊपर भँवर गुंजार कर रहे हैं। तरह तरह के पक्षी सुरीले शब्द कर रहे हैं।

तिन के मध्य में विशाल स्फटिक मणि का चौक है। उसमें नाना प्रकार की रचनाएँ बनी हैं। उसके ऊपर श्वेत रेशमी जाजिम बिछी है। ऊपर श्वेत चान्दनी तनी है। उसमें मोतियों की झालरें लगीं हैं। चारो तरफ स्फटिक मणि की खंभावली लगी हैं। उन खम्भों में अनेकों चित्राम बने हैं।

उसके मध्य में एक चन्द्र मणि का सिंहासन सजा है, जो अनेकों चन्द्रमा का प्रकाश कर रहा है।

सखियों के संयुक्त श्री प्रियतम प्यारी जू इस प्रकार के रासकुंज में आये। श्रीरास कुंजेश्वरी जू ने दोनों सरकारों को बैठा कर षोडशोपचार पूजन किया। साथ में आने वालीं सखियों का भी सत्कार किया। पुनः अनेक प्रकार के व्यंजन भोजन कराये। पुनः रासचौक में ल गईं।❀

तापर जाजिम स्वेत बिछी हैं, चन्द्र किरन के अति छविहारी।
ता मधि सिंहासन अतिसुन्दर, स्वेत मनिनमय अति सुठिकारी॥
तापर बैठे युगल बिहारी, श्री नृपनन्दन जनक दुलारी।

पद का शेषांश श्र अग्र स्वामी जू की अष्टयाम पदावली पृ० ३६ में देखें।

❀ सवैया ❀

❀प्रान पियारिहि राजकुमार जू बाग सुहावन आपु दिखाइकै।
आये जहाँ वर रास थली तहँ फूलन मंडप राख्यो छवाइ कै॥

रास शृङ्गार के समान दोनों सरकारों के अलग अलग रखे। पुनः श्रीप्रिया प्रियतम जू ने नखसे शिखा पर्यन्त परस्पर एक दूसरे का शृङ्गार किया। सखियों ने भी रास शृङ्गार किया।

❀ रास विहार वर्णन ❀

॥ चौपाई ॥

*रास मंडल दोउ राजदुलारे। अरस परस अंसन भुज धारे॥
मनिन सिंहासन ऊपरराजे। चहुंदिसि ललना गन छविछाजे
मनहुँ काम रति सेन सँवारे। विश्व विजय को कीन्ह विचारे॥
ऋतु बसंतवत द्रुमसबफूलै। चात्रिक सुक पिक कोकिलबोलै
सीतल मंद सुगन्धपवन चल। मधू भार तरुलता परस थल॥
मधुपन वृन्द नारि लै संगा। क्रीड़हि फूलन प रस रंगा॥

मध्य सिंहासन आप लसे पिय, वाम बिराजी सिया हरषाइकै।
वीरी खवावत खात लला, मिथिलेश लली मुख कंज छुवाइकै॥
(श्रीअवध सागर ११। ४४)

*अशोक वनिकां रम्यां राघवः सीतया सह।
प्रविवेश विहाराय तस्या एव विनोद भाक्॥ २॥
सखी सहस्त्र संयुक्ता जानकी जनकात्मजा।
रमयामास रामं सा नाना भावैः मनोरमैः॥ ३॥
ह्रिया कीर्त्या च शीलेन भर्तुः सीता हरन्मनः॥ ४॥
श्रीसत्योपाख्यान अध्याय २५।

पारावत वर सकुन सुहाये। जोड़ी मिलि क्रीड़हि मनभाये ॥
हँसि बोले पिय रासविहारी। चन्द्रकला मुख कंज निहारी ॥
रचहुँ रास मंडल सुखदाई। तान तात गति भेद जमाई ॥
*मुरली वीन मृदंग उपंगा। सारंगी सितार मुरचंगा ॥
सकल सुयंत्र एक सुर कीनी। यूथन यूथ सखी रँग भीनी ॥
मंडल करि कर सो कर जोरी। मध्य लाल दोउ करि रसबोरी

अर्थात् श्री अशोक वनिका श्री युगल रसिक जू की विनोद स्थली है। श्री मैथिली जू के सहित श्री राघव जू ने विहारार्थ उसमें प्रवेश किया। श्री जनकेन्द्रनन्दिनी जू ने सहस्त्रों सखियों के साथ श्री कौशलेन्द्रकुमार जू को नाना मनोरम हाव भावों से रमाया, तथा स्वकीय शील संकोच गुणादिकों से श्रीजनकदुलारी जू ने अपने प्राणवल्लभ जू का मन हर लिया।

*अशोक वाटिकायां तु विजहार बहून् ऋतून् ॥ ५ ॥
सीतया सह चासीनः पीठे मणि विचित्रिते।
ततस्तु सख्यस्ताः सर्वे लेभिरे परमां मुदम् ॥ ४२ ॥
राघवेण समाज्ञप्ता नृत्यं चक्रुर्मनोहरम्।
मृदंगं वादयामास काचित्परम सुन्दरी ॥ ४३ ॥
वादयन्त्यपरा वीणां कांस्य वाद्यं तथापरा।
वंशिकां तानपूरांश्च पणवं मुरजं मृदु ॥ ४४ ॥
गायन्त्योभिनयं चक्रू रामस्याग्रे मनोहराः।
नाना वेष धरास्तास्तु नृत्यमाना कलं जगुः ॥ ४५ ॥

लाल सिया कर निज कर धारे। नूपुर धुनि से ताल सँवारे॥
मृग सावक-नयनी रसभीनी। निरखत अंग अंग चित दीनी
मंडलचक्र फिरत सुधिनाहीं। ताल बन्धान गतिन्ह सँगजाहीं
छातीकटि अति लचकसुहाई। कमलनाल जिमि टूटिन जाई
बायें कर कटि अपर अंस धरि। गावत नाचत हँसतसुरनभरि

* दोहा *

ललना गन निज कर धरे, रास भाँवरी लेहिं।
सियालाल मुख देखिसुख, वारि मैन रति देहिं॥
यहि विधि सरद सुकुञ्ज में, करि विलास सुखरास।
चले लाल नृपनन्दिनी, हिम ऋतु कुञ्ज सुवास॥

॥ इति श्रीशरद्कुञ्ज रासविहार वर्णन ॥

अर्थात् श्री युगल किशोर जू सुदीर्घ तक श्री अशोक वाटिका के षट ऋतु कुञ्जों में विहार करते रह गये। श्री शरद कुञ्ज में आप श्रीमैथिली जू के संग मणि विचित्रित सिंहासन पर विराजे हैं। सखियाँ युगल छबि अवलोकन कर निहाल हो रही हैं। श्रीरास बिहारी जू की आज्ञा पाकर उन रमणियों ने मनोहर नृत्य किया। कोई सुन्दरी मृदंग बजाती है, कोई वीणा, कोई ताल, कोई वंशी, कोई तानपूरा, कोई पणव कोई मुरज बजाती हैं। नाना वेष धारण कर गान पूर्वक श्रीजानकी रमण जू के आगे नाट्योचित अभिनय प्रदर्शित किया।

(श्रीसत्योपाख्यान उत्तरार्द्ध अ० २५)

❀ अथ हिम ऋतु कुञ्ज विहार वर्णन ❀

❀ चौपाई ❀

❀हिमरितु महल सूर्यमनि सोहन। बनेविशाल लखत मनमोहन
कम्बल परदे द्वार झरोखन। रंग विरंग जड़े मनि रतनन ॥
पवनों की जहँ गति है नाहीं। सूरज मनि जहँ तहँ झलकाहीं
मणि पिंजरन में पक्षी सोहै। पाठ करत मुनिजन मन मोहै॥
पादप सूर्य मनिन बहुतेरे। साखा पत्र सुफूल घनेरे ॥
पर्यंकन बहु बने सुहाये। गरम मनिन रचना मनभाये ॥
गद्दे ओजनदार सुतूलन। मयन अयन जनु हैं सुखमूलन ॥
मनमथ चाव बढ़ावन हारी। तेहि पर बैठे प्रीतम प्यारी ॥

❀ चौपाई ❀

❀पुनि आये हिमरितुके कुंजहि। प्रियपिय सहित अलिनके पुंजहि
कुंज विशाल लाल रंग जोहै। चहुँदिसि कोट द्वार चहुँ सोहै ॥
ताके मध्य कुंज युग सोहै। इक पूरब इक पश्चिम जोहै ॥
युगल कुंज मधि एक वेदिका। तापर मण्डप चित्र रेखिका ॥
लक्ष खंभ मंगलमय रचना। देखत बनै न आवै बचना ।
लली लाल अलि युत तहँ आये। अलिगनके युग भाग बनाये ॥
दुहुँ समाज मिलि कीन्ह बिचारा। व्याह समय को सौजसँवारा
पूरब कुंज अलिन युत प्यारी। पश्चिम कुंज लाल पगुधारी ॥
अवध लाल दूलह बनि सोहै। जनक लली दुलहिन मन मोहै ॥
मिथिला अवध कुंज के नामा। व्याह उछाह होय दोउ धामा ॥

*** दोहा ***

बहुविधि हास विलास करि, हिमरितु कुञ्ज मझार।
सखिन जिमायो दुहुँन को, व्यंजन बहु रस सार ॥
पान मसाले देइ कै, अंगन अतर लगाई।
ता पाछे सखियन सबै, शेष प्रसादी पाइ ॥

॥ इति श्रीहिम ऋतु कुंज बिहार वर्णन ॥

दोउ समाज दंपति रुखजानी। विविध वेष धरि लीन्ह सयानी॥
दोउ दिशि दंपति रूप बनाई। कन्या वर लै लाड़ लड़ाई ॥
कोउ उपरोहित रूप बनाये। दोउ दिसि व्याह विधान बताये ॥
... . ॥
गाँठि जोरि दोउ भाँवरि देहीं। नयन लाभ सब सादर लेहीं ॥
जेहिविधि प्रथम भयो तसकीन्हा। सेंदुर दान नेग सब दीन्हा॥
दंपति एक सिंहासन राजे। कोटिन रति मन्मथ लखि लाजे ॥
पुनि कोहवर की लीला ठानी। केलि कुतूहल रसमय सानी ॥
कुंवरि कुंवर संग भोजन कीन्हें। शयन शाल सोये रसलीन्हें।

यहि विधि व्याह उछाह करि, कौतुक सकल नेवारि।
अलिन सहित चढ़ि नवलरथ, शिशिरकुंज पगु धारि।

श्रीविदेहजाशरणजी रचित श्रीअशोक वाटिका विलास।

❀ अथ शिशिर कुञ्ज विहार ❀

❀ चौपाई ❀

कुञ्ज शिशिर के बने सुहाये। पीत मनिनमय चहुँदिसि छाये
सकल सौंज तहँ पीत बनाये। पीतहि पीत देखि मन भाये॥
आये सखि समाज सह प्रीतम। देखे रचना कुंज मनोरम॥
पीत पोशाकें बहु लै आई। कुंजेश्वरि सिय पिय मन भाई॥
धरि आगे पहिरावन लागी। पिय प्यारी के सुखमें पागी॥
पीत पोसाक पहिरि पिय प्यारी।
नख शिख पीत रंग छबि धारी॥
सखिन सकल निज अँग शृङ्गारे। भूषन बसन वसन्ती धारे॥
वासन्ती व्यंजन बनवाई। पिय प्यारी भोजन करवाई॥
आपस में सब विधि वरताई। शेष प्रसादी सखियन पाई॥
चन्द्रकला सिय पिय रुख पाई। यूथेश्वरि गन को बुलवाई॥
बोली सर्वेश्वरि मृदु वानी। सुनहु सखिन मम परम सयानी

तथा तयो र्विहरतोः सीता राघवयोश्चिरम्॥
अत्युक्रामच्छुभः कालः शैशिरो भोगदः सदा।
प्राप्तयो र्विविधान् भोगानतीतः शिशिरागमः॥
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण
७।४२।२५, २६।

करहुगोल दइ विधितैयारी। इक प्रीतम दिसि इकदिसिप्यारी
यूथेश्वरि दुइ गोल वनाई । लगि खेलन वसंत सुखदाई ॥
सिय उर तकि पिय कुंकुम मारे । प्यारी कुंकुम पिय उरतारे
प्यारी भरि २ मूठिन रोरी । पिय कपोल मसलत बरजोरी ॥
दोउन गोल परस्पर जूटी । होन लगी रस रंग अनूठी ॥
खेलत सिय बसंत सँग प्यारे । बहु विधि मची रंग की रारें ॥

शिशिर ऋतू के कुंज में, बहु विधि खेलि वसंत ।
ऋतु वसंत के कुंज में, आये सखि सिय कंत ॥

॥ इति श्रीशिशिर कुञ्ज विहार वर्णन ॥

अर्थात् श्री अशोक वनिका के अभ्यन्तर नृत्यगान पूर्वक विहार करते हुये श्री मैथिली रघुनन्दन जू चिरकाल तक विराजे रहे । शिशिर ऋतु सदा भोग प्रदान करने वाली है, वह शुभ समय बीत गया ।

विविध भाँति के भोग विलास करते हुये शिशिर को भी वहीं व्यतीत किया ।

अथ बसन्त कुञ्ज विहार

❀ चौपाई

ऋतु वसंत के कुञ्ज अनूपम् । रचना बनी चित्र मनिभूपम् ॥
दीवालन में रचना सोहै । विविध भाँति चित्राम बनो है ॥
द्वार झरोखन अनुपम रचना । परदे बने विविध रंग वसना ॥
ताके मध्य बाग अति सुन्दर । जाति २ की भिन्न अवलिवर
लता ललित बहु जाति सुहाई । भिन्न २ की बरनि न जाई ॥
लता कुञ्ज बहु आकृति सोहै । रचना विविध देखि मन मोहै
रंग रंग के पुष्प खिले हैं । तिन पर भौंरन गूंज रहे हैं ॥
सीतल मन्द सुगन्ध सुहाये । त्रिविध वयार मनोज जगाये ॥
नानापुष्प सुगंधन उरिकै । दिसि अरु बिदिसगगन दइभरिकै
कोकिल मोर चकोर सुहाई सारस हंस कीर समुदाई ॥
पारावत अरु राज मराला । विचरहिं जहँ तहँ तिनकी माला
बोलहिं मधुर मनोहर बानी । मानहुँ पंचवान रस सानी ॥

श्रीवसन्तकुञ्ज का फूल डोल उतसव भी चिन्तवन करने योग्य है ।
श्रीअशोक वन विहार क्रम वर्णन करते हुये श्रीयुगल विनोद विलास रच-
यिता कहते हैं— (पाँचवा अध्याय)

रसिक शिरोमनि स्याम सीय संजुत सुषमाकर ।
सहज बिनोद विलास ललित अङ्क२ कुसुमाकर ॥
बहुरि मनोहर डोल कुंज पद कंज पधारी ।
जुगल लड़ैती लाल परम प्रतिकास सँवारी ॥६७॥
हरषित अधिक उमग संग रस रंग रंगीली ।
वसत विनोद समेत 'बसंत रंगिनी' रसीली ॥

वेदी जहँ तहँ बनी मनोहर। रचना विविध भाँति अतिसोहर
मणिमय घाट बँधे सर नाना। सरसिज संकुल भँवरलुभाना
बंगले जालदार अति सुन्दर। मानोमदन वसत तिहि अंदर
पिय प्यारी दीन्हें गलबाहीं। निरखहिं रचना कुञ्जन माहीं
बंगले में आये दोउ प्यारे। जूआ खेलन साज पसारे
अपनो अपनो दाव लगावैं। जीतन को रसचाव बढ़ावैं ॥
ऐसो दाव धरी सिय प्यारी। प्यारे की करनी सब हारी॥

बहु विधि केलि कलोल करि, ऋतु वसंत गृह माह।
आये तीसर कक्ष में, सखिन सहित सियनाह ॥

॥ इति श्रीवसंतकुञ्ज विहार वर्णन ॥

विमल वसंत प्रसून सरस सम्पन्न कुंज कल।
अति विचित्र चित चैन दैन बोलहि विहंगथल। ६८॥
कोकिल कलित कदंब मधुर मधुकर मोहन मन।
चहुँ दिसि अति रमनीय सोक समनीय मोदघन॥
मदन महान उमंग रंग सुमनन संदीपन।
रचना अमल अनेक लसत दिग दसहुँ उदीपन ॥६९॥
तेहि सुचि सदन नरेस सुवन सहचरिन सहित अति।
झमकि झूलि झुलवाय प्रान प्यारी प्रसन्न मति ॥७०॥

—❀::❀—

इस प्रसंग में मूल ग्रन्थ श्री हनुमत्संहिता रास पञ्चाध्यायी अध्याय ५। ४६, ४७। भी द्रष्टव्य है।

–: अथ तृतीय कक्ष :–

(द्रुम कुंजावरण)

॥ द्रुम कुञ्ज स्वरूप वर्णन ॥

(वार्ता)

तृतीय कोट के प्रथम खंड (तल्ले) में श्याम मणि की दीवाल है। उस पर अनेक मणियों की रचनाएं हैं। द्वितीय खंड में स्फटिक मणि, तृतीय में पीतमणि, चतुर्थ में पद्मराग मणि, पंचम में हरितमणि, षष्टम में नील मणि, सप्तम में पाटलमणि अष्टम में वैदुर्यमणि, तथा नवम में धुम्र मणि की दीवाल बनी है। इस तरह से चारो तरफ नव खंड का कोट महल बना है। कोट महलों के मध्य में यूथ की यूथ मनोरमाएँ जहाँ तहाँ कल्लोल कर रही हैं।

कोट के चारो तरफ चार गोपुर हैं। कोटके मध्य अवकाश❀ में अनेकों द्रुम कुञ्ज बने हैं।

❀ श्री बिदेहजा शरणजी के मत से इस आवरण की अन्तराल वाली भूमि पीतमणि जटित है। उस पर विविध रंग मणियों की रचनाएं होगी ही। यथा—

❀ दोहा ❀

"अब तीसर आवरण लखु, रचना ललित सुहाय।
पीत मनिन की भूमि पर, वृक्ष कुंज दरसाय॥
(श्रीअशोक वाटिका विलास)

जाति-जाति के वृक्षों* के कुंज बने हैं। कोई बृक्ष श्याम रंग के, कोई पीत रंग के, कोई लाल रंग के हैं। इस प्रकार बहुत रंगों के हैं। उनकी शाखा, स्तम्भ, पत्रों में भी कई भेद हैं। यद्यपि ये सभी स्वयं बृक्ष हैं, कृत्रिम नहीं हैं, परन्तु रंग रग मणियों के तद्वत् प्रकाश करने वाले हैं।

---

*कानन तहाँ अशोक शोक तेहि देखत भाजै।
विविध भाँति के बृक्ष सबै बृन्दारक राजै॥
शाखा पत्र अनूप कहा कहौं शोभा उनकी।
फल कुसुमन के झुंड निरखि सुधि रहत न तन की॥
(श्रीमत् अग्रस्वामी कृत श्रीध्यान मंजरी छं० २६, २७)

श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण, उत्तरकांड के व्यालिसवें अध्याय के प्रथम छब्बीस श्लोकों में श्री अशोक वनिका तथा यहाँ के विहार का बड़ा ही मनोरम वर्णन आया है। वहाँ श्रीअशोक वन के प्रस्तुत आवरण में स्थिति सत्ताइस जातियों के बृक्षों के नाम गिनाये गये हैं। यथा।—

चन्दन, अगुरु, देवदारु, कोविदार, कालीयक, नागकेसर, चम्पक, पारिजात, मन्दार, वकुल, नीप, कदम्ब, अशोक, पुंनाग, अर्जुन, सप्तपर्ण (छितवन), अतिमुक्तक, प्रियंगु, असन, लोध, आम, नारियल (तुङ्ग), मधूक, पनस (कटहल), कदली, जामुन, और अनार।

ग्रन्थ विस्तार भयसे मूल श्लोक यहाँ उद्धृत नहीं किये जा सके। श्री रसमालाजी रचित निम्नोद्धृत पद में इन द्रुमों के नामों का आनन्द लीजिये।

पादपों के महल बने हैं। जितने अङ्ग महलों के हैं, वे सब पादपमय बने हैं। चारो तरफ पादपों के ही महल बने हैं। पादपों के ही बंगले पादपों ही की वेदियाँ बनी हैं। महलों के अवकाशों में मधुर-मधुर फूलों की गुल्मावली लगी है। उनके भीतर फूलों की क्यारियां हैं। उनके भीतर फूलों के मणिमय गमले सजे हैं।

विहरत वन अशोक सिय राम।
सुखद बिहार भूमि सरजू तट अनुपम नित सुखधाम॥
वकुल रसाल कदंब तिलक हरिचन्दन बन बहु सोहै।
पारिजात संतान कलप तरु विपिन देव लखि मोहै॥
चलदल वट अशोक किंसुक तरु कोविदार धव फूले।
कर्णिकार कुरबक दाड़िम फल नारिकेल अनुकूले॥
ताल तमाल पनस चंपक वन पाटल श्रीफल केला।
कल कपित्थ निम्बू जम्बू फल पूग केतकी एला॥
दाख छुहार प्रियंग लवंग लता द्रुम सों झरफानीं।
मालति कुंद गुलाब चमेली वेलि वितान× बितानी॥
(×पादप महल के चंदोवे)
मल्लि वसन्त लता तुलसी सु जुही नव केसरि फूली।
और अनेक लता अवली जिन पै भ्रमरावलि भूली॥
[इन लताओं का ध्यान चतुर्थ कक्षमें भी कर्तव्य है]
वापिक कूप सरोवर शैल निकुंज अनेक विराजै।
प्रति द्रुम वेदि अनेकन कंचन भीति चहूं दिसि भ्राजै॥

इस तरह से अनेक रचनाओं से युक्त द्रुम कुंज हैं। यदि कहो कि जितने अङ्ग महलों के हैं, वे सभी वृक्षमय कैसे होंगे ? तो ऐसी शंका नहीं करनी चाहिये। क्योंकि इस दिव्य देश की जितनी वस्तुएँ हैं, सभी श्री प्रिया प्रियतम जू की मनोमयी हैं। जैसा आप का मनोरथ होता है, वही सत्य हो जाता है। यह निश्चय जानना चाहिये ❀

कोकिल हंस मयूर पिकालि मनोहर बोलनि बोलै।
पंकज फुल्ल चतुर्विध सौरभ सीतल वारि कलोलै॥
सीतल मंद सुगंध सुहावन पवन घनी द्रुम छाही।
'रसमाला' विहरत जहँ दम्पति सखिन सहित गलबाँहीं॥
(श्रीअवध सागर ११। २६)

❀ छप्पय ❀

❀मनिन वेदिका आस पास द्रुम द्रुम प्रति सोहै।
पटरी रौस विशाल हरित दुर्वा मन मोहै॥
मनिन जटित वर रत्न खचित चौकी बहु राजै।
सिंहासन पर्यंक अमित कुरसी कहुँ भ्राजै॥
क्रीड़ा मृगादि गज अश्व नर नारि लता द्रुम खेल हित।
रचि रास नटै कहुँ पूतरी रुचिर बनी कल की ललित॥ १॥
विपिन अशोक विहार भूमिथल विविध बनाई।
त्रिविध लता द्रुमकुंज विविध सोहत अमराई॥
विविध कुंज संकेत विविध रास स्थल सोहै।
विविध वितान जु तने निरखि सुरमुनि मनमोहै॥
जहँ त्रिविध सरोवर वापिका विविध कंज फूल विसद।
अरु विविध सैल जहँ क्रीड़ही राम सिया परिजन सुखद॥
[श्रीअवध सागर अध्याय ११]

❀ द्रुम कुञ्ज विहार ❀

श्रीनृपनन्दिनी तथा श्रीनृपनन्दन जू सखी समाज सहित गजरथ पर विराजमान होकर, तृतीय कक्ष के दरवाजे पर आये।

नगारे का शब्द सुनकर श्रीकक्षेश्वरी जू निज अनुचरी समाज सहित आकर, बड़े धूम धाम से आप का स्वागत करके आपका निज कुंज में लिवा ले गईं। सिंहासन पर बैठा कर, श्री प्रिया प्रियतम जू को षोडशोपचारों से पूजन किया। अनेक प्रकार के व्यंजन भोजन कराये। शेष प्रसादी सखियों ने सेवन किया।

तत्पश्चात् द्रुम कुंजों की रचना दिखाने लगीं। चारों तरफ सखी समाज निज निज सेवा सौंज लिये हैं। मध्य में श्री-प्रिया प्रियतम जू गलबाँही दिये रौसों पर चल रहे हैं।❀

❀ बाग विहार काल में चिदानन्दमयी श्रीअशोक बनिकाजी अपने विविध अङ्गों से जैसी सेवा श्री युगल मनरंजन जू की कर रही है, उसका आनन्द निम्नोद्धृत पद से लीजिये।

सीतल मंद सुगंध पवन की लगत झकोरैं।
हालत द्रुम की डार भरत जनु पियहि अँकोरैं॥
झरत फूल बहु रंग गलीचा मनहुँ बिछाये।
कुसुमित छाया छत्र कदलि जनु चमर दुराये॥
फल पनस मृदंग बजाव जनु विल्व देत करताल तल।
नितत मयूर कपोत छवि निरखति लाड़िलि लालमल॥

(श्रीअवध सागर ११। ३२)

परस्पर में नाना तरह के हास्य रस की वार्त्ता करते हैं। कहीं बृक्षों की रचना दखते हैं। कहीं कहीं मृग यूथ विचर रहे हैं। कहीं झुण्ड के झुण्ड पक्षी कल्लोल कर रहे हैं। फूलों के ऊपर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। कहीं यूथ की यूथ मदमाती मनोरमाएँ नृत्य गान कर रहीं हैं।

इस तरह से विचरते हुये कुंजों की शोभा देखते हैं।❀ कहीं बंगले में विश्राम करते हैं। वहाँ विलासिनियाँ नृत्य गान करती हैं। कहीं पासा खेलते हैं। कहीं दम्पति ऐकान्तिक विहार करते हैं।

इस प्रकार से तृतीय कक्ष के द्रुम कुंजों में अनेक प्रकार से विहार करके, सखी समाज सहित चतुर्थ कक्ष के लिये प्रस्थित हुये।

॥ इति श्री द्रुम कुंज वाले तृतीय कक्ष का विहार वर्णन ॥

❀आह्लादिनो तु दम्पत्योरशोक थनिकैव सा।
तस्यां च दम्पती एवं नेत्रोत्सवतया स्थितौ ॥८॥
एक नेत्रं तयो रासीन्मिथो रूप वशीकृतम्।
वनश्रिया हृतं चान्यद्विरोधोपि तयोरभूत ॥६॥
(श्रीशिव संहिता अध्याय ६)

अर्थात् श्रीप्रिया प्रियतम जू के लिये श्रीअशोक वनिका आह्लाद स्वरूपा है। अतः दोनों वहाँ नयनानन्द सुखार्थ बिराजमान हैं। दोनों के एक-एक नयन तो पारस्परिक रूप दर्शनों के वशीभूत हो रहे हैं तथा दूसरे नयन को वन की शोभा ने मोह लिया है। अतः दोनों नयनों में कुछ पारस्परिक बिरोधाभास सा हो रहा है।

-: अथ चतुर्थ कक्ष :-

* लता कुञ्ज आवरण *

॥ चतुर्थ कक्ष का स्वरूप वर्णन ॥

(वार्ता)

*चतुर्थ कक्ष के नव तल्लों वाले कोट महल में प्रथम खण्ड वाली दीवाल चारो तरफ से पद्मरागमणिमयी है। उसके ऊपर अन्यान्य रंगों की मणियों से रचनाएँ बनी हैं। द्वितीय खंड की दीवाल नील मणि की, तृतीय खंड की पीतमणि की, चतुर्थ खंड की स्फटिक मणि की, पंचम खण्ड की हरित मणि की, षष्टम खण्ड की पाटल मणि की, सप्तम खंड की वैदुर्य मणि की, अष्टम खंड की धुम्र मणि की तथा नवम खंड की पांडुर मणि की दीवाल है। इन खंडों के भीतर बाहर अनेकों रचनाएँ हैं। उन खंडों के अवकाशों की गच्ची स्फटिक मणि की है। उन पर अनेकों रचनाएँ हैं।

---

* दोहा *

*अब चतुर्थ आवरण लखु, नील रंग की भूमि।
लता कुंज बहु रंग के, चहुँ दिशि लखिये घूमि॥

* चौपाई *

कोट नवल चहुँ दिसि दरवाजे। चित्र मनोहर सोभा साजे॥
सिय पिय अलिन सहित तहँ आये। लताकुंज जहँ लगत सुहाये
हरित पीत अरुनादिक रंगा। सदा एक रस नवल अभंगा॥
ऋतु वसंत सोभित सब मासा। बहु रग पक्षी करत निवासा॥
सुक पिक मोर चकोर सुसारिक। सारस हंस लालमुनि आदिक

इस कक्ष के अन्तराल में विविध जातियों के रंग रंग के लता कुंज हैं। कहीं सेबती कुंज है, कहीं मालती कुंज है, कहीं चमेली कुंज है, कहीं जूही कुंज है। इसी तरह से अनेकों लता कुंज हैं।

उनमें जाली झरोखा, वेलि बूटा खिड़की आदि सभी रचनाएँ बनी हैं।

कुंजों के मध्य में अनेकों प्रकार की बेदिकादि बनी हैं। तरह तरह के पक्षी कलरव कर रहे हैं।

चहुँदिसि सड़कन सुमनबिछाये अतर गुलाबन डारि सिंचाये॥
तेहि मग ह्वै विहरै दोउ प्यारे। अलिगन सेवा सौज सँबारे॥
प्रथमहि हरित कुंज पगु धारे। बैठे अरस परस भुज धारे॥
मेवा फल बहु अलि गन लाई। सिय पिय पावत करत बड़ाई॥

❀ दोहा ❀

फल भोजन जल पान करि, बैठे दोउ सुख पाय।
अतर-पान दै माल वर, अलिगन लाड़ लड़ाय॥

❀ चौपाई ❀

पुनि उठि हरषि चले दोउ प्यारे। दुसरे कुंज आय पगु धारे॥
पीत लता चहुँ दिसि रहि छाई। खंभे द्वार वितान सुहाई॥
लली लाल तहँ आय विराजे। चौपर खेलि अलिन सुखसाजे॥
पुनि उठि चलत भये पिय प्यारी। आगे आय खड़ी मृगधारी॥
गौर श्याम मृग रूर निहारै। चित्र समान पलक नहि पारै॥
सिय पिय निकट जाँयकर फेरैं। कछुक पवाय नवल छबि हेरैं॥

❋ लता कुंज विहार ❋

इस तरह से रचना युक्त लता कुंज में श्री कुञ्जेश्वरी जू सत्कार पूर्वक श्री महाराज दुलारे जू को समागत परिकर सखी समाज सहित लिवा लाईं, और कुंजों की रचना दिखाने लगीं।

सब कुंजों में युगल मनभ वन जू पधारते हैं, जहाँ जाते हैं, वहाँ की कुंजेश्वरी अपनी अनुचरियों के साथ सखियों के सहित दंपति का लाड़ पूर्वक सत्कार करती हैं।

इस तरह से लता कुंजों में खेलते खेलाते, सब सखियों को सुख देते, उन सबों से आप दोनों सुख प्राप्त करते, बहुत काल तक विहार करके, श्रीराजनन्दिनी राजनन्दन जू पंचम कक्ष को चले।

॥ इति श्रीचतुर्थ कक्षे लताकुंज विहार वर्णन ॥

वह्वासन गृहोपेतां लतागृह समावृताम् ।
अशोक वनिकां स्फीतां प्रविश्य रघुनन्दनः॥
आसने च शुभाकारे पुष्पप्रकर भूषिते ।
कुथास्तरण संस्तीर्णे रामः संनिषसादह ॥

[श्रीमद् वाल्मीय रामायण ७।४२।१६-१७]

अर्थात् लता गृहों से युक्त, अनेक आसनों से सुसज्जित सुबिस्तृत अशोक बनिका में श्रीरघुनन्दन जू ने प्रवेश किया।

गिलम गलीचों से सजी गच्ची पर, पुष्प राशि से विभूषित मनोहर सिंहासन पर, श्रीजानकी रमण जू बैठ गये।

इस प्रकार लता कुंजों का वर्णन आर्ष ग्रन्थ में भी आया है।

❀ अथ पंचम कक्ष ❀

❀ फूल कुंज आवरण ❀

❀ पंचम कक्ष का स्वरूप वर्णन ❀

❀ वार्ता ❀

पंचम कोट महल के प्रथम खंड में हरित मणि की दीवाल है, द्वितीय खंड में पद्मराग मणि की, तृतीय खंड में पिरोजमणि की, चतुर्थ खंडमें श्याम मणि की, पंचम खंड में वैदूर्यमणिकी, षष्टम खंड में स्फटिक मणि की, सप्तम खंड में धुम्र मणि की, अष्टम खंड में पांडुर मणि की तथा नवम खंड में पाटलमणि की दीवाल है। प्रत्येक खंड की दीवालमें नाना रंगों की मणियों की रचनाएँ हैं।

❀ दोहा ❀

अब पंचम आवरण में, चहुँ दिसि लखि मन मोह।
पद्मराग मनि भूमि पर, फूल कुंज बहु सोह ॥
चहुँ दिसि मनिमय कोट पर, कलस कंगूरे सोह।
नव खंडे नव रंग के, ध्वज पताक छवि जोह ॥
सिंह पौरि चहुँ दिसि सुभग, नौबत धुनि सरसाय।
द्वारपालिका अलिन के, कर मनि बेंत सुहाय ॥
वापी कूप तड़ाग वर, सोभित मनि सोपान।
वेदी बंगले चौक मग, छबि नहिं जाय बखान ॥

पंचम कोट के मध्य अवकाशमें फूल कुंज हैं। जहाँ देखो तहाँ फूल ही कुंज दीखते हैं। कहीं गुलाब फूल कुंज है, कहीं एक फूल की प्रधानता है, और-और फूलों से तरह-तरह की रचनाएँ बनी हैं। कहीं चमेली फूल कुंज है। कहीं जूही फूल कुंज है। इस तरह से जाति-जाति के फूल कुंज, इनमें अनेकों तरह के बंगले, बेदियाँ, इत्यादि सब फूल ही फूल की रचनाओं से बनी हैं।

॥ चौपाई ॥

सियपिय अलिन सहित तहँआये। रचना लखि उर आनंदछाये॥
प्रथम गुलाब चौक पगु धारे। अलिन सहित बैठे दोउ प्यारे॥
सुमन सिंगार अलिन युत कीन्हें। हरषि चले गलबाहीं दीन्हें॥

❀ पद ❀

अन्तःपुर सु अशोक विपिन मधि, चहुंदिसि धवल धाम रतिकारी।
मधि मधि पंक्ति पुष्प महलन की, चौहट राज सुभग सोभा री॥
वीथी सरल कुटिल बहु राजत, कंचन भूमि कलित गच ढारी।
सात सु भूमि सौध रतनन के, विहरत त्तिन मधि राम सिया री॥
वृक्ष सुखण्ड निकुंज सुशोभित, विहंग वृन्द कूजत मनहारी।
अशोक वाटिका मधि अन्तःपुर, राजत्त ललित सात कक्षारी॥
चहुंधा षट ऋतु कुंज मनोहर, जहं विहरत श्रीराम विहारी।
कुंजेश्वरी अनेकन सखिगन, सेवत रघुबर जनक दुलारी॥
करि सिंगार सुमनमय नख सिख, निरखत दंपति वेष छटारी।
धरि मेवा पकवान विविध विधि, करवावत भोजन विधि चारी॥

❀ फूल कुंज विहार ❀

जब श्री प्रिया पियतम जू पंचम कोट के दरवाजे पर आये, तब आपका शुभागमन सुनकर, श्रीकदेश्वरी जी ने बड़े धूम धाम से स्वागत पूर्वक निज कुंज में ले जाकर, विधि विधान से आप का पूजन किया। पुनः फूलों के कुंज कुंज में जाकर वहाँ की रचना दिखाने लगीं।

जल अँचवाय बीटिका दै मुख, अधर माधुरी रहत निहारी।
'युगल अली' सियराम चन्द्रमा, महल-महल सेवत सब नारी॥

(श्रीभावनामृत कादम्बिनी पद संख्या ३६४,
पद ३६५ भी फूल कुंज विहार परक है।)

॥ चौपाई ॥

नवल मालती कुंजहि आये। अलिन सहित बैठे चित चाये॥
अलिन सहित दोउ भोजन करहीं। हास विलासन आनंद भरहीं
विविध भाँति मेवा पकवाना। फेरि पवावहिं अलिकरि गाना॥

❀ दोहा ❀

जल पिलाय अचवाय पुनि, अतर पान दै माल।
गलवाहीं दै अलिन युत, चलत भये ललि लाल॥

॥ चौपाई ॥

नवल सरोवर तट पर आये। मछलिन को बहु अन्न खवाये॥
विविध रंग जल जंतु सुहाये। दंपति छवि लखि आनँद पाये॥

कहीं वेदी पर दोनों सरकार बैठते हैं। रमणियाँ नृत्य-गान करती हैं। कहीं गेन्द खेलते हैं। कहीं परस्पर शास्त्रार्थ करते हैं। कहीं श्रीप्रिया प्रियतम जू अरस परस शृङ्गार करते हैं। कहीं पाशा खेलते हैं। कहीं फूल की शय्या पर विहार करते हैं।

तहँ ते गेन्द चौक पुनि आये। फूल गेन्द बहु तुरत मँगाये ॥
खेलन लगे हरषि दोउ प्यारे। हार जीत के दाव सँभारे ॥
मालाकार अली चहुँ ओरी। छवि निरखहि जनु चंद चकोरी ॥
अरस परस दोउ गेंद चलावहिं। खेलहिं में बहु कला दिखावहिं
अति आनन्द उमगि पियप्यारी। जोश भरे खेलहि श्रम भारी॥
प्रीतम हारि सिया जय पाई। सुमन बरषि अलि डङ्क बजाई ॥
अति अनुराग उमगि दोउ प्यारे। हरषि फुहारा कुंज पधारे ॥
अति विसाल इक नवल फुहारा। छत्राकार गिरे जल धारा॥
सुमन सिंहासन तेहि तर सोहै। लली लाल बैठे अलि जोहै ॥
लाल लली को अंग सँवारै। श्रमित निहारि व्यजन कर धारैं॥
अरस परस दोउ पान खवावैं। आधा लै निज २ मुख पावैं॥
कबहुँ परस्पर माल बनावहिं। विविध भाव तामें दरसावहिं॥
तहँ ते हरषि उठे दोउ प्यारे। आलिन सहित आगे पगु धारे ॥
मोर चकोर चलत मग घेरै। भ्रमित होहिं घन चन्द्र उजेरै ॥
आलिन सहित चलि प्रीतम प्यारी। बेला फूल कुंज पगु धारी॥
सुमन सेज अलि तुरत बनाई। अति कोमल मसलंद लगाई ॥

❀ राग बिलावल ❀

*देखो सखि आज रात, क्षीर सिन्धु में विभात,
सम्पा घन मध्य युगल, लहरि राज सोहरी।
ताकत निज डांट घाव, जुटत हटत लेत दाव,
बापी मधि मीन मगन, उछरै मन मोहरी। १॥
हंसन की अवलि घेरि, करत शब्द बेरि बेरि,
मानहुँ जय हेतु विविध, मधुर जंत्र बाजरी।

तिहि ऊपर ललि लाल विराजे। चहुँ दिशि ललित चारिदरवाजे
सुमन चाँदनी जाल झरोखे। खंभ किवाड़ फूल के मोखे॥
पान खात मुसकयात परस्पर। सेवा साजि खड़ी अलि सुन्दर॥
लगि मसनंद रसिकमनि उंगठे। सिय सोई पिय उरु शिर धरिके
व्यजन लिये पिय भंवर उड़ावैं। चारुशिला सिर छत्र फिरावैं॥
चन्द्रकला अलि चँवर लियेकर। प्रेमलता सिय चरन सेव वर॥
अपर अली चहुँदिशि ते सोहैं। सेवा साज सजे रुख जोहैं॥

❀ दोहा ❀

यहि विधि विविध विहार करि, अलिन सहित ललि लाल।
छठम खंड के द्वार पर, आये चाढ़ सुखपाल॥

* यह पद श्री रसमोद माधुरी पृ० ५६ में भी छपा है। वहाँ पाद टिप्पणी में कुछ शब्दार्थ भी देकर भाव स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है।

कबहूँ जुग भोग धाय, पूजत शिव को मनाय,
कबहुँ कंज ऊपर रस, लेत कंज राजरी ॥२॥

उलटि लता पलटि घटा, किलकत जुग परिघजुटा,
मानत नहिं तानत झक झोरत इतरात री ।
देखत यह अपन नैन, कहत नहीं बनत वैन,
गुंगे गुड़ खात 'मोद', कहत न सकात ही ॥३॥

इस तरह से पंचम कक्ष में नाना भाँति से विहार करके षष्टम कक्ष को चले ।

इति श्रीपंचम कक्षे फूल कुंज विहार वर्णन

❋ अथ षष्टम कक्ष ❋

❋ कृत्रिम बृक्ष कुञ्ज आवरण ❋

॥ कक्ष का स्वरूप वर्णन ॥

॥ वार्ता ॥

षष्टम कक्ष के कोट महल के नवो खण्डों में नील मणि की दीवाल है। उस पर अनेक रगों की मणियों से बेलि बूटे, चित्रामादि बने हैं।

इस कोट के अवकाश में चारो तरफ कृत्रिम बृक्षों के कुंज बने हैं। यावत् अंग बृक्षों के हैं, सब मणि से रचित हैं। दीवाल, महराव, स्तंभादि सब बृक्षों के ही बने हैं। कहीं नील-मणि, कहीं पीत मणि, कहीं स्फटिक मणि, इस प्रकार रंग-रंग मणियों से कृत्रिम द्रुमों के कुंज बने हैं।

इन कृत्रिम पादपों का प्रमाण श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण उत्तर कांड अ० ४२ के ७, ८, और ९ वे श्लोकों में है।

तथैव तरुभिर्दिव्यैः शिल्पिभिः परिकल्पितैः ।
चारु पल्लव पुष्पाढ्यैर्मत्त भ्रमर संकुलैः ॥
कोकिलै र्भृङ्गराजैश्च नाना वर्णैश्च पक्षिभिः ।
शोभितां शतशश्चित्रां चूतबृक्षावतंसकैः ॥

अर्थात् जैसे स्वयं बृक्षों के नाम पूर्व श्लोकों में गिना आये हैं, उसी भाँति और भी सुन्दर पल्लव, पुष्पों से भरे दिव्य बृक्ष हैं। उनके

तिनके मध्य में चारो तरफ कृत्रिम वृक्षावली बनी है। उन वृक्षों के फल, पत्र इत्यादि सब कृत्रिम ही हैं। उनके ऊपर कृत्रिम पक्षी बैठे हैं।

वृक्ष पंक्तियों के भीतर चारो तरफ जाति जाति की कृत्रिम लताएँ बनी हैं। तिनके मध्य में कहीं बँगले, कहीं वेदि-काएँ, कहीं तड़ागादि अनेक रचनाएँ बनी हैं। भूमि पर झुंड के झुंड कृत्रिम पक्षी बिचर रहे हैं, यूथ के यूथ कृत्रिम मृग छलांगे भर रहे हैं। ये सब सूत्रों के सहारे विचरते और कूजते हैं।

मध्य-मध्य में कहीं मोती के वृक्ष, कहीं मूंगा के बृक्ष बने हैं। जहाँ-तहाँ यूथ की यूथ मनोरमा नायिकाएँ कल्लोल कर रही हैं।

इस प्रकार षष्टम कक्ष की रचना है। इस प्रसंग में नीचे वाली चौपाई स्मरणीय है।

"विधिहि भयेउ आश्चर्य विशेषी।
निज करनी कछु कतहुँ न देखी।।"

पुष्पों पर मत्त भ्रमर बैठे हैं। विचित्र आम्र शिखाएँ कोकिल, भृङ्गराज तथा रंग विरंगे पक्षिओं से सुशोभित हैं। इन सारे समाज की रचना शिल्पियों ने की हैं। अर्थात् सब के सब कृत्रिम हैं।

पूर्वोक्त बृक्ष कृत्रिम ही है, इस विषय को स्पष्ट करने के लिए महर्षि आगे बताते हैं कि—

❋ कुञ्ज विहार ❋

श्री प्रिया प्रियतम जू जब षष्टम कोट के फाटक पर आये, तब श्रीकक्षेश्वरी जू आपके शुभागमन का शब्द सुनकर, निज अनुचरियों के सहित आईं। पटपाँवड़े देती, स्वागत उत्सव पूर्वक अपने कुञ्ज में ससमाज आपको लिवा गईं। विधिविधान से पूजन कर, कुंजों की रचना दिखाने लगीं।

श्री प्रिया प्रियतम जू कुंज-कुंज प्रति जाकर अनेकों क्रीड़ाएँ करते हैं, और सभी बनिताओं को आनन्द देते हैं।

इस तरह से षष्टम कक्ष में नाना प्रकार की केलि क्रीड़ा कर, श्रीलड़ैती लाल जू ससमाज सप्तम कक्ष को चले।

इति षष्टम कक्षे कृत्रिम बृक्ष कुंज
विहार वर्णन।

शातकुम्भानिभाः केचित् केचिदग्नि शिखोपमाः।
नीलाञ्जन निभाश्चान्ये भान्ति तत्रस्म पादपाः ॥६॥

अर्थात् कोई बृक्ष तो स्वर्ण के समान हैं, कोई (मणि रचित होने के कारण) अग्नि शिखा के समान चमकीले हैं, कोई (श्याम मणिरचित होने के कारण) नीले अंजन के समान हैं। मणि रचित होने से सभी 'भान्ति' अर्थात् चमक रहे हैं।

-: अथ सप्तम कक्ष :-

* चतुश्चौक आवरण *

॥ कक्ष स्वरूप वर्णन ॥

(वार्ता)

सप्तम कोट की दीवालों की रचना नवों खण्डों की विचित्र मणि कृत जानना। ये मणि गण घंटे-घंटे पर रंग बदलते रहते हैं। जैसे घण्टे भर तक नील रंग दर्शित हुये, पुनः वही मणि गण दूसरे घण्टे में पीत हो गये, पुनः तीसरे घण्टे में सब लाल हो गये। इस तरह प्रत्येक मणि दिन भर में अनेकों रंग बदलती रहती है। ऐसी ही मणियों के कोट वाले कुंज सब बने हैं।

इस कोट के मध्य अवकाश में चारों तरफ चार चौक हैं। पूर्व चौक में केलि कुंज, दक्षिण चौक में रासकुंज, पश्चिम चौक में हिंडोलकुंज, और उत्तर चौक में फाग कुंज हैं।

प्रत्येक चौक के मध्य अवकाश में चारो तरफ वृक्षावली लगी है। उनके मध्य में तरह-तरह के फूलों की क्यारियां हैं।

चारों चौकों के मध्य में एक बड़ा विशाल* तड़ाग है।

---

* श्री रुद्रयामल अन्तर्गत श्रीअयोध्या माहात्म्य के बारहवें अ० में श्रीअशोक वन का वर्णन श्लोक २२ से ५६ तक बहुत सुन्दर ढङ्ग से हुआ है। वहाँ श्री अशोक वाटिका के मध्य में श्री सीताकुण्ड की स्थिति बताई गई हैं, यथा—

उस तड़ाग में चारो तरफ मणियों के सोपान बन्धे हैं। अनेकों तरह के बुर्जे बने हैं। उस तड़ाग के मध्य में षष्ट* आवरण है। प्रथम आवरण में चौसठ, द्वितीय में बत्तीस, तृतीय में षोड़श, चतुर्थमें अष्ट यूथेश्वरियों के ससमाज निवास महल बने हैं। पंचम आवरण में अष्ट सेवा कुंज हैं। षष्टम आवरण में श्री प्रिया प्रियतम जू के रहने के लिए निज महल है। इन सबों में अनेकों रचनायें हैं। कहाँ तक वर्णन करें ?

तात्पर्य यह कि जब श्री युगल सरकार श्रीअशोक वाटिका में पधारते हैं, तब बहुत दिनों तक यहीं रहते हैं, क्योंकि श्री अशोक वाटिका आपको अधिक प्रिय है। इससे षष्टम आवरण वाले निज महल में खास निवास रखते हुये, अन्यान्य कुंजों में जाया करते हैं।

"तस्यां तु वाटिकायां च सीताकुण्डं विराजते।
सीतया किल तत्कुण्डं स्वयमेव विनिर्मितम्॥'४६॥

अर्थात् श्रीअशोक वाटिका के मध्य में श्रीसीताकुण्ड स्थित है। इसे स्वयं श्रीमैथिली जू ने अपनी कृपा से प्रकट किया है।

श्री अवध सागर के ग्यारहवें रत्न के ३३ वें छन्द में भी— "वन अशोक के मध्य सुहावन कुण्ड सिया को॥" कहा गया है।

सम्भवतः यही विशाल तड़ाग श्रीसीता कुण्ड है।

* विशाल तड़ाग के मध्य में छै आवरणों की जो चर्चा श्रीचरण कर रहे हैं, उनके नाम तो यहाँ आये, पर उनके विस्तृत वर्णन आगे नहीं किये गये।

उस तड़ाग में चारो तरफ चार सड़क हैं। चारो कल पर बने हैं। जब चाहें अलग कर दें, जब चाहे लगा दें। इस प्रकार से सप्तम कक्ष की रचना जानना।

❀ अथ कक्ष विहार वर्णन ❀

श्रीप्रिया प्रियतम जू सखी समाज संयुक्त जब सप्तमकोट के दरवाजे पर आये, तब संग की सखियों ने द्वार के नगारे पर चोप दिया। सो सुनकर कक्षाधीश्वरीजी अपनी सखियों के समाज सँयुक्त बाजे गाजे के साथ दरवाजे पर आईं। दोनों सरकारों का पूजन कर प्रणाम किया। सब समागत सखियों से मिलीं।

तत्पश्चात् पट पाँवड़े देती, नृत्यगान करती, निज कुंज में ल जाकर दोनों सरकारों को सिंहासन पर विराजमान कराया। अनेकों प्रकार के व्यंजन भोजन कराये। आचमन कर.कर दोनों सरकार को बीटिका पवाई अतर घ्रान कराकर आरती उतारी। तत्पश्चात् शेष प्रसाद आपस में बरता कर सखियों ने पाया। तत्पश्च.त् श्रीकेलि कुंज को श्री युगल मन-हरण जू चले।

रसिकराज श्रीविदेहजा शरणजी महाराज ने पूज्यपाद श्रीग्रन्थकर्त्ता जू की कृपा प्रेरणा से स्वरचित श्रीअशोक वाटिका विलास के आठवें से बारहवें आवरणों तक का बिशद वर्णन किया है। अतः उतने अंश को प्रस्तुत ग्रन्थ के परिशिष्ट भाग में जोड़ दिया गया है।

* चौपाई *

*केलि कुञ्ज पहुँचे दोउ प्यारे। श्री नृपनन्दिनि राजदुलारे ॥
कुंजेश्वरि पूजन विधिकीन्हीं। नृत्यगान करि बहुसुखदीन्हीं
कुंजेश्वरि बोली मृदुवानी। सुनहु प्रान जीवन धन दानी ॥
कुञ्ज अनेकन हैं इहि माहीं। भिन्न भिन्न रचना है ताही ॥
कोई कुंज तो ऐसो आहीं। छन लाली छन पीत दिखाहीं
छन स्यामल छन गौरसुसरसे। छन पाटल छन हरित सुदरसे
कोइ छन दिन रजनी पुनि छनहीं।
छन प्रभात छन सन्ध्या बनहीं ॥
कोई छन हिमऋतु दरसावै। छन ही में गरमी पुनि लावै ॥
छन पावस छनशिशिर दिखावै। छन बसंत छन सरदसोहावै
ऐसो कौतुक बहुत दिखाते। कुंज २ प्रति बरनि न जाते ॥
जहँ मरजी हो तहँ लै जाऊँ। पिय प्यारीको सुखदरसाऊँ ॥

❀ श्रीअशोक वाटिका विहार करते हुये श्री केलि कुंज में पधार कर वहाँ वहुविधि विहार करने का वर्णन श्री युगल विनोद विलास के अ० ५, में पढ़िये।

अपर केलि कल कुंज गये सुख सिन्धु सुभग तन।
जेंहि थल बृन्दा सखी भरी रसरंग नेह धन ॥
नित्या नित्यानन्द महानिधि निज मज्जति मन।
दंपति चरित सप्रेम गाय बारति तन मन धन ॥६३॥

दंपति बोले सुनहु सयानी । तुम सबही विधिहौ सुखदानी
जहाँ २ कौतुक के सचना । तहँ लै चलहु दिखावहु रचना

❋ केलि कुञ्जान्तर्गत कौतुकागार विनोद ❋

❋ सोरठा ❋

सुनि दंपति के वैन, कुंजेश्वरि हरषित भई ।
चंचल करि निजनैन, कौतुक गृह को लै चली ।।

❋ चौपाई ❋

कौतुक गृह आये दोउ प्यारे । कुंजेश्वरि सब कहँ सतकारे ।।
कौतुक गृह की रचनाभारी । लगीं दिखावन न्यारी न्यारी ।।
कुञ्ज मध्य इक संदुक भारी । तामें लगे सूत्र सब न्यारी ।।
पृथ्वी तल होइ पुनि चहुँफेरे सूत्र लगे सब कौतुक केरे ।।
जिस कौतुक को चहै दिखावै । ताहि सूत्र पर हाथ चलावै
दीवालन के अन्दर माहीं । बाजे बहु दरसे सब ठाहीं ।।

रास रसिक सिरमौर तत्र बहु विधि विहार करि ।
विपुल भाँति सनमानि नवल निज नाह नेह धरि ।।
कामकेलि कल सहित तष आली रसज्ञ रचि ।
बहुरि सुखद प्रिय कुंज आय राजे सुनेह सचि ।।६४।।

इस प्रसंग में मूल ग्रन्थ श्रीहनुमत्संहिता, रास पञ्चाध्यायी, अ० ५ श्लोक ४२, ४३ । भी देखने योग्य है ।

बिना बजाये ही सब बाजत । ताल तान गतिभेद उचारत ॥
सबके सुर मिलि इक ह्वै जाहीं। एक न भिन्न ताल से जाहीं
बड़े बड़े जे गुनी कहावैं। अचरज करैं ताहि सिर नावैं ॥
पुनि जब दूसर कल को फेरी। सजि सिंगार नारि बहुतेरी॥
दीवालन अन्दर में दरसैं। करैं कटाच्छ रंग बहु बरसैं ॥
देखि लाल विह्वल ह्वै जावैं। दीवालन में हाथ चलावैं ॥
वे तो इनके हाथ न आवैं। ताली दै दै इन्हें लजावैं ॥
बाहर की जितनी सखियाँ सब। हँसन लगी दै दै ताली तब
इतनी नारी संग रहतु हैं। तद्यपि कामहि को तरसतु हैं ॥
पुनि वे नृत्यकरन तबलागी। हाव भाव करि रतिसुखपागी
जो जो रसके भाव दिखावैं। सांगोपाँग तिनहि दरसावैं ॥
पुनि कुंजेश्वरि कल को फेरी। होरी होन लगी बरजोरी ॥
रंग भरे चहबच्चे सोहैं। दीवालन में जहँ तहँ जोहैं ॥
करपूरन के चूर सजाये। रंगन के बहु थाक बनाये ॥
नारि पुरुष निकसे बहुतेरे। पिचकन साजि साजि बहु दौरे
मारहिं पिचका भरि भरि रंगन।
भीजि जाहिं नख सिख सब अँगन ॥
बस्त्र महीन अंग सब काहीं। भीजे ते सर्बाङ्ग दिखाहीं ॥
नारी झुंड २ मिलि करिके। पुरुषहि घेरि नचावहि धरिके

माने हार तो छूटन पावै । नहिं तौ नारि सिंगार सजावै ॥
वह लीला अदृश्य भई जब । सर में नृत्य लगे होने तब ॥
बहु नारी मिलि बाहांजोरी । जल के ऊपर नृत्य करो री ॥
पुनि सब जलके भीतर जाई । नृत्य करन लागी रसदाई ॥
नाना भाँतिन यंत्र बजतु हैं । गान ताल लै स्वर उचरतु हैं॥
कोइ अपरोक्ष दीखती नाहीं । बहुविधि कौतुककुंजे माहीं॥
रचना विविध न बरनि सिराहीं । पियप्यारी देखत हरषाहीं

❋ दोहा ❋

यहिविधि कौतुक देखिके, संग सखिनके व्रात ।
चंग चौक आये बहुरि, पिय प्यारी हुलसात ॥

❋ इति श्रीकौतुकागार विनोद ❋

केलि कुञ्ज अन्तर्गत चंग चौक

॥ चौपाई ॥

कनक अटा चढ़ि सोहत न्यारे। सखिन संग सिय राजदुलारे
कुंजेश्वरि बहु गुड्डी लाई। रंग रंग की वर्रानि न जाई ॥
पीत रंग कोइ गुड्डी राजे। ता मधि मोर स्याम रँग आजे॥
स्याम वरन की गुड्डी आहीं। तामें हंस गौर झलकाहीं ॥
कोउ महँ सारस जोड़ी सोहै। शुग्गी पंक्ति कतहुँ मनमोहै॥
दोउआगे गुड्डी धरिदीन्हीं। निज२ चीन्हि राखि दोउलीन्हीं
स्याम रंग प्यारी को भाई। पीत वरन प्रीतम सुखदाई ॥
भाँति अनेक पतंग नचवत। पृथ्वी छ्वाय अकास चढ़ावत
लरत पतंग अनेक प्रकारा। यथा रंग चीन्हन अनुसारा ॥
निज पतंग पिय सिय पर नांधत।
सिय पतंग को बहु बिधि बांधत ॥
सिय निजचातुरता दरसावत। निज पतंगहँसि आसुछुड़ावत
कोमल करनि फिरावतप्यारी। कौतुककरि पिय चंगपै डारी
हँसिप्यारी फंदे बहुडारी। सियमुख लखिभे थकित खेलारी
पियपतंग सिय दीन्हगिराई। सिय जीती अलि वाद्य बजाई

❋ दोहा ❋

दंपति यहि बिधि परस्पर, खेलत विविध प्रकार।
मोद बढ़ावत सखिन हिय, विपिन अशोक विहार॥

॥ इति श्री चंग चौक विनोद ॥

केलि कुञ्ज अन्तर्गत गेन्द चौक विनोदः—

* चौपाई *

गेन्दचौक आयेपुनि दंपति। सबही बिधिसखियनसुखसंपति
कुंजेश्वरी गेन्द लै आई । जामें किंकिन लगी सुहाई ॥
जुगल गोल सखियन करि लयऊ।
इक सिय दिसि पिय दिसि इक भयऊ॥
खेलत गेन्द दोउ रस फँसिके । छाती तानि चलावत हँसि के
झमकि झमकि दोऊ दल दौरे । नूपुर धुनि सरसी चहुँ ओरे॥
अतिलाघवता करि सियप्यारी । कन्दुक केलि कला चितधारी
प्रीतम की सीमा से बाहर । पुनि पुनि करत गेंद ताड़न कर ।
सिय की ओर चलावत प्रीतम । बीचहि रोकि लेति हैं हरदम
प्रीतम करि बहु विधि चतुराई । बहुत बार सिय ओर चलाई
पिय के कन्दुक एकहु वारा । जात नहीं सिय सीमा पारा ॥
अति चंचल ह्वै ताड़त जाई । सिय चंचलता कहि नहिं जाई
अलकैं छुटि२ मुख पै आवैं । सिय निज हाथनि दूरि हटावैं।।
मुख मंडलपै श्रमकन झलकै। वारिज कोस ओस जनुचमकै
गेन्द खेल की लाघवताई । जनु दामिनि बहु छिति पै धाई
निरखि पिया सिय चंचलताई । पवन मनो गति वारत जाई
स्वेदन तरवर जदपि भयो है । तदपि न खेलन चाव गयोहै॥

दौड़ि पिया सिय कंठ लगाई। अलं प्रिय यह मोहि न भाई॥
अति सुकुमार अंग तव प्यारी। श्रम नहिं अस तेरे अनुहारी॥

॥ दोहा ॥

अस कहि प्रीतम अंक में, सियहि लीन्ह बैठाइ।
मुख पोंछत पंखा करत, बहु विधि लेत बलाइ॥
सखिनसिमिटि चहुँओरते,सियपिय ढिगमेंआय
सेवा समयोचित सरस, करन लगी हरषाय॥
सिंहासन राजत रुचिर, तापर दुहुँ बैठाय।
भोजन सविधि कराइकै, नृत्य किये गुनगाय॥
शेष प्रसादी पाइ कै, आपुस में बरताइ।
पिय प्यारी को लै चली, और कुञ्ज हरषाइ॥

॥ इति श्रीगेन्द चौक विनोद ॥

श्री अशोक वनिका के अभ्यन्तर कन्दुक क्रीड़ा का बड़ा ही सरस वर्णन श्रीशिव संहिता अध्याय १४, श्लोक ४८ से ६६ तक किया गयाहै। ग्रन्थ विस्तार भय से वह उद्धरण यहाँ नहीं दिया जा सका। उस वर्णन की कुछ छाया प्रस्तुत रचना में भी पड़ी है।

केलि कुञ्ज अन्तर्गत अभिनयशाला में योगिनी लीला

❊ चौपाई ❊

मनिमय महल बने चहुँ ओरे। ता मधि लता कुञ्ज चहुँफेरे॥
ताके मध्य वेदिका सोहै। रचना रुचिर जासु मन मोहै॥
ताके ऊपर सिय पिय राजे। चहुँ दिसि सखियन मंडलगाजै
कोउ मिसु करि सिय को बहलाये। लाल कुञ्ज ते बाहर आये
रूप योगिनी सजे पियारे। बड़े चतुर नहिं परहिं चिन्हारे॥
पुष्ट उरोज बनाय सजाये। मनहुँ मदन निज वच्छ बसाये॥
आये ताहि कुञ्ज दरवाजे। जहँ सिय के दरबार बिराजे॥
छद्म योगिनी हँसि कह बानी। सुनो द्वारपालिनी सयानी॥
हौं परदेसन रहने वाली। कोककला से सब विधि पाली॥
खबर देहु रानी सो मेरी। जोगिन दरसन चाहै तेरी॥
सिय जू सों सो जाइ सुनाई। जोगिन एक दरस को आई॥

बोली प्रिया जाय लै आवो। कैसी है वह आनि दिखावो॥
द्वार पालिनी तिहि लै आई। करि प्रनाम सिय ढिग बैठाई॥
सियबोली सुनु सखी पियारी। केहि कारन आगमनतिहारी
जोगिन बोली हे महरानी। काम शास्त्र में बहुविधि जानी

मिली न अबतक कोऊ नारी। जाहि दिखावौं निज गुनभारी
मेरे गुन को परखन वारी। जग में विधि सिरजी नहिं नारी॥
गुनग्राही हौं आप सयानी। दरसावौं गुन जौ मनमानी॥
जो गुन काम शास्त्र नहि पैहौ। कला चातुरी तोहि बतैहौं॥
सिय बोली सोकहौं बखानी। जो जो कला कोक की जानी॥
प्रथमहि छोटे गुन दरसाऊँ। फिर पाछे गुन गूढ़ बताऊँ॥
प्रथम परीक्षा लीजै मेरी। फिर पाछे मन सुफल भरे री॥
संप्रयोग चिर ते तिय अंगा। शिथिल होय चाहै नव रंगा॥
तिहि को जौ हमार कर परसै। तीनों गुन तिहि तियमें दरसै
मुग्धा सी चाहै बनि जावै। मध्यावत वा पियहि छकावै॥
अगर नवोढ़ा सुखको चाहै। पिय सँग तैसहि रस निरबाहै॥
चाहै मध्या सुख को गोरी। अंग विकास होय तैसो री॥
बारक परसे ते गुन तीनों। तिय में रहै लहै रस भीनो॥
छद्म जोगिनी की सुनि बानी। उक्ति युक्ति सियके मनमानी
चन्द्रकला जू बड़ी सयानी। जोगिनि चतुराई सब जानी।
जोगिनि तुम जो कहीबखानी। सो सब सत्य न झूठसयानी
पहले अपने अंग परीक्षा। देहु करहु फिर जो तव इच्छा॥
जोगिनि तब बोली मुसकाहैं। का तो मन में भर्म भयो हैं॥

मैं अपने ही अंग सुमाहीं । देत परीक्षा शंका नाहीं ॥
मोर परस कर अस मरजादा । एकै परस कार्य सो साधा ॥
दूजीवार फेर अस परसौं । काय हानि ह्वै है पुनि तरसौं ॥
मैं अपनो अँगपरसि चुक्योहैं । अब परसो तो हानि रख्यो है
इतनी शंका है यह भारी । और नहीं आपत्ति हमारी ॥
जो अँग तेरे सोई मोरे । या में का संदेह बसो रे ॥
चन्द्रकला तब नैन सैन भरि ।
सखियन दिसि चितई मुरि हँसि करि ॥
चहुँ दिसि ते सखियन सब दौरी । छोरि लई नीवी बरजोरी
हाँ हाँ करत रही वह नारी । छीनि लई कटि सो तिहि सारी ॥
पुनितिहि की चोली बँदतोरी । करनलगी बहुविधि बरजोरी
ताली दै दै हँसै ठठावै । व्यंग वचन बौछार करावै ॥

यहि विधिसे यह खेलि करि, पिय प्यारी दोउ संग ।
सिंहासन आसीन ह्वै, मगन भये रस रंग ॥

॥ इति केलि चौक अन्तर्गत योगिनी लीला ॥

प्रहेलिका बुझौअल

❀ दोहा ❀

रचि रचि रुचिर प्रहेलिका, अंगन को दरसाय ।
हँसि२ करत विनोद दोउ, सखियन सुख झलकाय ।।

❀ छंद ❀

सुनिये राजनन्दिनी प्यारी, देखति हौ नहिं प्यारी ।
*धन पै रवि२ में कवि, सुकयुत ससि तहँ करत विहार।।
तामें हैं जुग कुण्ड मनोहर, सुधा मुधा कर स्वाद ।
खेचर बनचर जलचर सुखजुत, नित बस रहित विवाद।।

❀ दोहा ❀

तेहि उत्तर दै लाल को, पुनि पूछी सियवाल ।
+सूर सुवन ऊपर लखौ, मित्र उदै यहि काल।।
कहि कहि बहुत प्रहेलिका, सखियन सह सियलाल ।
कामसाल को चलत भय, जहँ रचना रसख्याल ।।

---

* यहाँ रूपकातिशयोक्ति अलंकार में केवल उपमानों के द्वारा उपमेय के लक्ष्य कराये गये हैं। धन से श्रीप्रिया कंचुकी समझना चाहिय। शशि से श्रीप्रियतम मुख लक्षित किया जो सुक (नासिका , तथा कवि नाश।मणि) से सम्पन्न रवि (प्रियापदिक) में प्रतिविम्बित है। दोनों कुण्ड नेत्र गह्वर हैं, जिनमें खेचर (खंजन , बनचर (मृग) तथा जलचर (मीन) नयन के उपमान बनकर, पारस्परिक कलह (वैर भाव) त्याग कर एकत्र रहते हैं।

+सूरसुवन (=सूर्यपुत्र शनिश्चर) से श्रीप्रिया जू की नीलकं उ।लक्षित है तथा कंचुकी पर रदिक ही मित्र [सूर्य] रूपमें उदित है। चुकी ही

[] अथ कामशाल सुरति विहार []

*** चौपाई ***

आये कामशाल पियप्यारी। जहँ रचना अद्भुत् विस्तारी॥
चहुँ दिसि कुञ्ज बने अति सुन्दर।
कोक कला चित्रित तिहि अन्दर॥
दालानों में सयन सजाये। मयन अयन जेहि जोहि लजाये
ताके मध्य लगी फुलवारी। रंग रंग फूलन युत न्यारी॥
मध्य मनोहर बंगला नीको कै दरबार मार प्रिय जीको॥
ऊपर तने वितान बिराजे। तामें मोती झालर छाजे॥
हंडी झार बहुत विधि सोहैं। लाल सेत पित हरित सजो हैं॥

पट पिधान जरतारी के हैं। बेली बूटे बहुत बने हैं॥
मध्य रेशमी जाजिम सोहै। तामें रचना बहु मन मोहै॥
ता ऊपर पर्यंक विछो हैं। पाटी पावा हीरा को हैं॥
तेहि के ऊपर गद्दे राजे। देखत छीर फेन दुति लाजे॥
तकया अरु गलतकया सोहै। पियप्यारी के सुखद रसो हैं॥

चहुँदिसि खंभावलि झलकाहीं। दम्पतिकी पुतली तिनमाहीं
पुतली से पलका लौं लाये। भुइं भीतर होइ सूत्र लगाये॥
पिय प्यारी बैठे पलका पर। मानो रतिपति राजैं छविधर॥

सखिसब द्वार झरोखेलागी। निरखहिं यहसुख अतिअनुरागी
आपसमें कहि कहि बतराई। लखु सखि कस पियरस बरषाई

* चौपाई *

प्यारी को अस मनमें आही। यहसुख सब सखियनको चाही
सब को छोड़ि अकेले खावे। सो तो जगमें सुजस न पावे ॥
अस बिचारि सियबोलीं बैना। सुनहु प्रानपति मम सुखऐना
यह सुख सब सखियनको दीजै। मोर मनोरथ सुफल करीजै
पियबोले सुनु प्रान पियारी। कस न होहु यह छितिपकुमारी
राउरि आज्ञा सिर पर मेरी। बिनु आज्ञा न करौं भटभेरी ॥
असकहि प्रीतम सब गृहमाहीं। जाइ २ रति सुख बरताहीं ॥

मोद सिया परदे के बाहर। निरखत दंपति केलि कलाकर॥
बहुत पिया फुसलायो उनको। मोद न भे पिय रसबस तनको
मैं तो अनन्या हौं सिय जू को। और न जानौं मैं काहू को॥
सिय बोली सुनु प्यारी बहिनी। करुपिय संग रंगरस बहिनी
दीदी हम आहाँ के रसमें। छकल रहै छी निसा दिवस में॥
आहाँ के सुखरस के आगे। निज सुख रस अति फीको लागे

*** दोहा ***

यहि बिधि दंपति सेजपर, करि नाना रसकेलि।
परदा दयो उठाय तब, आई अलियन हेलि॥
सिंहासन बैठाय कै, भोजन विविध कराइ।
स्रगसुगन्ध दै वीटिका, करि आरति बलिजाइ॥
रास चौक गवनत भये, पिय प्यारी अलि संग।
कौतुक मोद विनोदमय, करत विविध रस रंग॥

* इति कामशाल सुरति विहार वर्णन *

— ❀ —

-: अथ रास चौक :-

❀ रूपक वर्णन ❀

❀ वार्ता ❀

चारो तरफ चन्द्रमणि के अनेकों कुंज बने हैं। दीवालों में नाना प्रकार की रचनाएँ बनी हैं। दालानों में तरह-तरह के चंदोवे तने हैं। फरश पर रंग-रंग की जाजिमें बिछी हैं। उसके ऊपर कहीं पर्यङ्क, कहीं बेंच, कहीं सिंहासन आदि सजे हैं। दरवाजों में रंग-रंग के परदे पड़े हैं।

तिन कुंजों के मध्य में चारो तरफ स्फटिक मणि की खंभावली बनी है। उनमें अनेकों रंगों के चित्राम बने हैं। खंभावली के बीच-बीच में रंग-रंग के जड़ाऊ परदे पड़े हैं। परदे के चारो तरफ किंकिणी लगी है। ऊपर मेहराव बने हैं, तोरन वन्दनवार बन्धे हैं। मोतियों की झालरें लगी हैं।

उसके मध्य में चारो तरफ पारिजात, मन्दार, चन्दन, कंकोल, कदम्ब, रसालादि की वृक्षावली सजावट के साथ लगी है। उन पर जाति-जाति की लताएँ फैली हैं। मोर, चकोर, सारस, हंस, शुकादि पक्षी जहाँ-तहाँ यूथ के यूथ विचर रहे हैं। कोकिला, पपीहादि सुरीले शब्द उच्चारण कर रहे हैं।

पक्षियों के जोड़े मिलकर आपस में कल्लोल कर रहे हैं। चारों तरफ फूलों की क्यारियाँ बनी हैं।

उसके मध्य में एक बड़ा विशाल चौक है। उसकी गच्ची पर स्फटिक मणि की रचना है। उस चौक के मध्य में एक विशाल सोमवट है। इसके पत्र-पत्र में चन्द्रमा के समान प्रकाश है। इसके नीचे चन्द्रमणि का सिंहासन है। गच्ची के ऊपर चौक भर में श्वेत जाजिम बिछी है। ऊपर में चौक भर की चान्दनी तनी है। प्रान्त में बेलि बूटे आदि नाना रचनाएँ बनी हैं। चारो तरफ मोतियों की झालरें लगी हैं। रेशम के गुच्छे लगे हैं। चान्दनी के चारो ओर चन्द्रमणि की खंभावली लगो है। उनमें अनेकों चित्राम बने हैं। स्वच्छ आकाश में षोडश कलाओं से सम्पन्न चन्द्रमा अपनी किरणों को छिटकाते हुये दशो दिशाओं में अपनी ज्योत्स्ना बिखेर रहा है। चन्द्र-किरणों से स्नात द्रुम लताओं की शिखाएँ चमचमा रही हैं।

❋ रास चौक की प्रारम्भिक परिचर्या ❋

रास चौक के दरवाजे पर सखी समाज संयुक्त श्री प्रिया प्रियतम जू की सवारी आई। अवाई सुनकर श्रीकुंजेश्वरी जी पट पाँवड़े देकर अपने कुंज को लिवा लाईं।

दोनों सरकारों को सिंहासन पर विराजमान कराकर, षोडशोपचार से पूजन किया। तत्पश्चात् सुवर्ण के थालों में सजकर नाना प्रकार के व्यंजन ले आईं। सामने चौकी पर थाल रखकर, एक-एक व्यंजन का स्वाद बखान-बखान कर आह्लाद में निर्भर होकर, बहुत देर तक दोनों को भोजन कराने

का लाड़ लड़ाती रहीं। जलपान कराकर, आचमन कराया। बीड़ा देकर, अतर लगाया। पुनः सखियों को प्रसाद बरता कर स्वयं भी प्रसाद सेवन किया।

पुनः श्री युगल विहारी जू की गद्दों से सुसज्जित दूसरी चौकी पर बिठलाया। चौकी के चारो ओर, रास श्रृङ्गार के भूषण पोशाकों से भरी पेटियाँ खोल कर सजाई। तत्पश्चात् श्रीरासबिहारिणीविहारी जू के नखसे शिखा पर्यन्त रासश्रृङ्गार किया। सखियों ने भी रास श्रृङ्गार धारण किया।

इस प्रकार रास श्रृङ्गार से बनठन कर, श्री युगल ललन जू रास चौक के मध्य वाले सिंहासन पर विराजमान हुये। सखियाँ वाद्य यन्त्रों को मिलाने लगीं।

* चौपाई *

कोइ वीना सितार कर कोई। कोइ मुचंग कठतालहुँ कोई॥
सारंगी सुरंग धर कोई। कोइ मुरली मृदंग लिय कोई॥
कोइ झरझर उपंग लिय कोई। कोइ मंजीर तमूर लिय कोई
यहिविधि विविध सुयंत्रसुहाई। सबके सुर सम ताल मिलाई
सकल सुयंत्र एक सुर कीनी। यूथ यूथ सखियन रँगभीनी॥
गावन लगीं सखी समुदाई। स्वर में स्वर सब एक मिलाई
चन्द्रकला जब बीन बजाई। सबके मनसि मनोज जगाई॥
सिंहासन से उठि दोउ प्यारे। रास मंडल के मध्य पधारे॥

मंडलरचि सखियन करजोरी। मध्यलाल दोउकरि रसबोरी
युगललाल मिलि गावन लागे। हाव भाव करि रसमें पागे
जब प्यारी अलाप सुठि लेई। सुर अरु असुर विमोहितहोई
दोऊ कटि पै हाथन धरिके। लेत नृत्य गति थिरकि २ के॥
लटकनि मचकनि मुख मटकावनि।

भृकुटि चलावनि नैन नचावनि॥
चार हाथ पृथ्वी को छोड़ी। ऊपर ही नाचत यह जोड़ी॥
लत्रा हंस गति लेत मोर की। पारावत गति गिरह मार की
पुनि प्यारे सब के सुख हेतू। दुइ दुइ मध्य भये रस केतू॥
दुइ दुइ मिलि के हाथन जोरी। लागे रास करन रसबोरी॥
मुख चूमे अरु अंग लगावै। रस अंगन पर हाथ फिरावै॥

बेसर काहु अलक उरझाये। पिय निज कर कंजनि सुरझाये
यहि विधि सकल तियन सुख दैके।

प्यारी संग भये पुनि एकै॥

श्रीअशोक वनिका वाले रास, महारास की अनेक महावाणियाँ रसिकाचार्यों की उपलब्धहैं। खाशकर श्रीअवध सागर में तो केवल इसी वन के रास का सुविस्तृत वर्णन किया गया है। ग्रन्थ विस्तार भय से उन्हें यहाँ उद्धृत नहीं किया गया।

* दोहा *

वन अशोक के मध्य में, रास कीन्ह सियलाल ।
जड़ चेतन मोहित भये, काहू के न सम्हाल ॥
शिव ब्रह्मादिक देव सब, आनँद मुरछा खाय ।
जहँ के तहाँ अचेत हैं, कोउ ढिग कोउ न जाय॥
यहि विधि रास सुचौकमें, रासकियो सियकंत ।
पुनि सिंहासन आय कै, बैठे दोउ हुलसन्त ॥
बहु विधि सौरभ से सनी, दूध मलाई ल्याय ।
सखिन पवाई लाड़सों, निरखत छवि न अघाय॥
अंग सुगंध लगाइ कै, बीरी ललित पवाइ ।
करि आरति निवछावरहु, पुनि २ लेत बलाइ॥
तामदान चढ़ि के दोऊ, चलत भये तत्काल ।
सखिन संग आये ललन, जहँ हिंडोलके साल॥

* इति रास चौक बिहार वर्णन *

अथ हिंडोल चौक

॥ हिंडोल चौक का स्वरूप वर्णन ॥

चौपाई

नाना रंग मनिनको सचिके । सजे हिंडोल साल अति रचिके
चहुँ दिस महल बने रँगदाई । तामें रचना बिविध सुहाई ॥
तेहि के मध्य चहूँ दिशि काँई । पाँती पाँती बृक्ष लगाई ॥
मलय कदंब अशोक रसाला । तिनकी शाखायें छबिजाला ॥
तिन वृक्षनमें लगे हिंडोला । रचित खचित रतनन अनमोला
तिहि हिंडोलकी शोभा जो है । कहत न बनै देखि मनमोहै ॥
पक्षी जाति जाति के बोले । कलरव करै लेय मन मोलै ॥
ताल जाति वहु भाँति सुहाई । तामें कंज खिले बहुताई ॥
मनियन यंत्रन बने फुहारे । तिन तें छुटे अनेकन धारे ॥
मध्यचौक इक बंगला भारी । मनहुँ मदन तेहि स्वकर सँवारी
चन्दोवा रंग हरे तनो हैं । तेहि में मोतिन झालर सोहै ॥
झार फनूस हरित रंग सोहै । हंडी चषकैं हरित बनो हैं ॥
खंभावलि सव हरित ढंग की । तिन में पुतली रंग रंग की ॥
सौज साज तिहि बंगले माहीं । हरित रंग के सब झलकाहीं
ताके मध्य बिशाल हिंडोला । निरखत ही चितहोत अडोला
तामें बहु चित्राम रचो हैं । कामशास्त्र अनुरूप सचो हैं ।

✱ अथ हिंडोर बिहार ✱

✱ चौपाई ✱

हरी हरी पोशाकें अंगे । धारि विराजे लालन संगे ॥
अरस परस रस व्यंग सुनावत। मौज मनोज सुजिय उपजावत
दोउ दिसि सखीं झुलावनलागीं निरखि२ दंपति रसपागीं
बहुतन यंत्र बजावन लागीं बहुतन नृत्य करैं अतिरागीं ॥
प्रीतम प्यारी मन की जानी । सकल तियन सुख देवै ठानी॥
वृक्ष-वृक्ष प्रति लगे हिंडोले । तेहिपर प्रतितिय सँग पियझूलें

कोउ कह मेरी कमर पिराहीं । प्रीतम ताहि दबाइ सिहाहीं ॥
कोउ भरि मोद गोद पिय बैठी । निज सौभाग्य गरवसे ऐंठी
कोउ समुझे अपने मनमाहीं । पिय तो मेरेई बस आहीं ॥
यहि विधि सब निज२मनमाहीं। भाग सुहाग सराहि अघाहीं
सब जानै पिय मम आधीने । और तियन नहि चहत प्रवीने

✱ दोहा ✱

यहि विधि झूला चौक में, दंपति झूला झूल ।
आये फाग सु चौकमें, सकल सखिन सुखमूल॥

✱ इति हिंडोल चौक बिहार वर्णन ✱

❀ अथ फाग चौक ❀

❀ दोहा ❀

कुंजेश्वरि बहु भाँति से, दम्पति पूजन कीन।
भोजन विविध कराइ के, फाग सौंज धरिदीन॥

❀ चौपाई ❀

फागुन चौक बने रस रूपा, रचना इक से एक अनूपा॥
रतन रचित हौदन के माहीं। केसर नीर भरे गमकाहीं॥
धूर कपूरन ढेर लगे हैं। मृग मद के बहु चू धरेर हैं॥
बहुत गुलालके थाक धरे हैं। कुंकम संख्या कौन गने हैं॥
विविध भाँति के यन्त्र बने हैं। कल फेरत रंग बून्द झरे हैं॥
एकहि वार हजारन केरे। रंगन भरि नख शिख लौं बोरे॥
दो दल यूथ भये छन माँहीं। इक प्यारी इक प्रीतम काहीं॥
दोउ दिसि यंत्रन बाजन लागे। रंगखेल चित चाव सुजागे
निज निज स्वामी जै जै करि के।
दोउ दल भिरे परस्पर झरि के॥
केसर नीर भरी पिचकारी। एक एक के ऊपर डारी॥
एकहि एकन धरि धरि लेहीं। रंगन से तरवर करि देहीं॥
मूठी भरि भरि डारि गुलालन। रोरीसे मसले दोउ गालन
काचित् पकरि गोद में लेहीं। रंग कुण्ड में डारि सुदेहीं॥